ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

फाल्गुन-चेत्र, संवत् नानकशाही ५४५-४६
वर्ष ७ अंक ७ मार्च 2014

संपादक : सिमरजीत सिंघ *एम. ए, एम. एम. सी.*
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ *एम. ए, एम. एम. सी.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
फैक्स: 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

बापु हमारा सद चरंजीवी ॥ भाई हमारे सद ही जीवी ॥
मीत हमारे सदा अबिनासी ॥ कुटंबु हमारा निज घरि वासी ॥१॥
हम सुखु पाइआ तां सभहि सुहेले ॥ गुरि पूरै पिता संगि मेले ॥१॥रहाउ॥
मंदर मेरे सभ ते ऊचे ॥ देस मेरे बेअंत अपूछे ॥
राजु हमारा सद ही निहचलु ॥ मालु हमारा अखूटु अबेचलु ॥२॥
सोभा मेरी सभ जुग अंतरि ॥ बाज हमारी थान थनंतरि ॥
कीरति हमरी घरि घरि होई ॥ भगति हमारी सभनी लोई ॥३॥
पिता हमारे प्रगटे माझ ॥ पिता पूत रलि कीनी सांझ ॥
कहु नानक जउ पिता पतीने ॥ पिता पूत एकै रंगि लीने ॥४॥ *(पन्ना ११४१)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी 'भैरउ' राग में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद में फरमान करते हैं कि हमारा प्रभु-पिता चिरजीवी है, सदा स्थिर रहने वाला है। हमारे सतसंगी अर्थात् आत्मिक सांझ रखने वाले भी आत्मिक जीवन वाले बन गए हैं। हमारे साथ प्रभु-सिमरन की सांझ रखने वाले भी सदा के लिए अविनाशी बन गए हैं अर्थात् अटल आत्मिक जीवन वाले बन गए हैं। इस प्रकार इंद्रियां-वृत्तियां रूपी परिवार भी प्रभु-घर का निवासी बन गया है अर्थात् हमारी इंद्रियां-वृत्तियां भी प्रभु-हुक्म में रहने लगी हैं। गुरु जी का फरमान है कि जब प्रभु-पिता के साथ हमारा मिलन हुआ तो हमें आत्मिक सुख प्राप्त हो गए तथा इसी प्रकार हमारे साथ संबंध रखने वाली इंद्रियां आदि भी आत्मिक सुख से आनंदित हो गईं।

गुरु जी का आगे फरमान है कि प्रभु-पिता के साथ मिलन होने से वे आत्मिक स्थान भी ऊंचे हो गए जहां हमारी ज़िंदगी निवास करती है। मेरी ज़िंदगी के आत्मिक स्थान इतने ऊंचे हो गए कि वे यमों आदि की पूछताछ से परे हो गए अर्थात् किसी लेखे-जोखे से कोई वास्ता न रहा, मात्र प्रभु-पिता से ही स्नेह स्थापित हो गया। तब से हमारी अपनी इंद्रियों पर हकूमत चलती है जो कि अटल है अर्थात् हमारी इंद्रियां हमारे वश में हो गई हैं। तब से हमारे पास प्रभु-नाम का खज़ाना एकत्र हो गया है जो कि कभी समाप्त होने वाला नहीं है। प्रभु की जो शोभा सारे युगों में हो रही है हमारे लिए यही शोभा है। प्रभु की जो प्रशंसा सारी जगहों पर हो रही है हमारे लिए भी यही प्रशंसा है। जो कीर्ति प्रभु की घर-घर में हो रही है हमारे लिए भी यही है। सभ लोगों में प्रभु की जो भक्ति हो रही है हमारे लिए भी यही है। कहने से तात्पर्य कि प्रभु-पिता के साथ मिलाप होने से हमें किसी भी तरह की (सांसारिक) कीर्ति-प्रशंसा की आवश्यकता नहीं रही। प्रभु-पिता के साथ मिलाप होने से वे हमारे हृदय में प्रकट हो गए। प्रभु के साथ हमारा प्यार, हमारी सांझ ऐसे बन गई जैसे पिता-पुत्र का प्यार हो। अंतिम पंक्तियों में गुरु जी फरमान कर रहे हैं कि प्रभु-पिता जब अपने जीव-पुत्र पर प्रसन्न होते हैं तो प्रभु-पिता तथा जीव-पुत्र दोनों (उस प्यार में) सदा के लिए एक हो जाते हैं; तब उनमें कोई भेद नहीं रहता है। ❁

होला-महल्ला के शुभ अवसर पर मानसिकता को बदलने का आह्वान

पंद्रहवीं शती में मनुष्य की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सभ्याचारक तथा मानसिक गुलामी के विरुद्ध श्री गुरु नानक देव जी द्वारा ज़ोरदार आवाज़ बुलंद की गयी। इन गुलामियों ने मनुष्य को इतना निर्बल कर दिया था कि उसने इन परिस्थितियों में ही विचरण करना सीख लिया। सदियों से गुलामी झेलते हुए हिंदोस्तानी इसके आदी होकर गुलामी को ही अपनी तकदीर मानने लग गए थे। उस समय हिंदोस्तान के लोगों को शस्त्र धारण करने, घुड़सवारी करने तथा दसतार सजाने आदि की सख़्त मनाही थी। दसतार केवल वही सजा सकता था जिसको बादशाह की तरफ से दरबारी बख़्शी गयी होती थी। घुड़सवारी करना, निशान, नगाड़ा तथा फौज रखना हकूमत के विरुद्ध बगावत समझी जाती थी तथा उल्लंघन करने वाले की सज़ा मृत्यु एवं घर-बार का उजाड़ा था। यही कारण था कि आम लोग चुपचाप ज़ब्र झेल रहे थे, कोई भी हकूमत के अत्याचार के विरुद्ध मुंह नहीं खोलता था।

इस गुलामी की जिल्लत भरी ज़िंदगी में से भारतवासियों को निकालने के लिए गुरु साहिबान ने भरपूर प्रयत्न किए। गुरु साहिबान ने हिंदोस्तान के लोगों के सोए हुए स्वाभिमान को जगाकर उनके मन में चढ़दी कला का एहसास पैदा करने हेतु यहां मनाए जाते त्योहारों को खालसाई रूप दिया। १७५६ बिक्रमी के वैसाखी वाले दिन 'पांच प्यारों' की सृजना कर लोगों को शस्त्रधारी होने के लिए प्रेरित किया। इसी तरह चेत वदी प्रथम, संवत् १७५७ बिक्रमी वाले दिन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने होलगढ़ नामक स्थान पर पहली बार 'होली' के स्थान पर 'होला-महल्ला' मनाकर सिक्खों को शस्त्र चलाने में मुहारत हासिल करने की तरफ प्रेरित किया।

इसके बाद 'होला-महल्ला' सिक्खों के लिए अहम दिवस बन गया। यह दिवस आज भी होली से अगले दिन बहुत ही श्रद्धा-भावना से मनाया जाता है। गुरु साहिब ने होली के परंपरागत रूप को रद्द कर दिया चूंकि इस दिन लोग एक-दूसरे पर गंदगी फेंकने, बुरे वचन बोलने, शराब पीकर हुल्लड़बाज़ी करने जैसी हरकतों को ही 'होली' का अंग समझने लग गए थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इस त्योहार को नये रूप में मनाने के लिए इसका नया नाम 'होला-महल्ला' कर दिया। 'पंजाबी लोकधारा विशव कोश' के अनुसार 'महल्ला' शब्द अरबी भाषा के शब्द 'महल्लहे' का तद्भव है जिससे आशय उस स्थान से है, जहां फ़तहि प्राप्त करने के उपरांत ठिकाना किया जाता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने होले-महल्ले वाले दिन सिंघों के दो दल बनाकर आपस में मनसूई (नकली) युद्ध करने की रिवायत को जारी किया। एक दल किला होलगढ़ पर काबिज़ हो जाता था, दूसरा दल उस पर नकली युद्ध करके किले को छुड़ाने की कोशिश करता था। इस तरह से जंगबाज़ी की युक्तियां तथा पैंतरेबाज़ियां सीखी एवं सिखाई जाती थीं। युद्ध के नगाड़े बज उठते, शस्त्रों के टकराने की आवाज़ पहाड़ियों में गूंज उठती, जैकारों से आसमान गूंज उठता, अंत को फ़तहि की खुशी मनाते सिंघों के जत्थे सड़कों पर निकल आते। पहले 'महल्ला' शब्द इसी भाव

के लिए प्रयोग किया जाता रहा। धीरे-धीरे यह शब्द उस जलूस के लिए प्रचलित हो गया जो फ़तहि उपरांत फौजी सज-धज एवं नगाड़ों की चोट पर निकालते हैं। होला-महल्ला के नगर कीर्तन की प्रथा आज भी प्रचलित है। इन सबके पीछे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की वह दूरंदेशी सोच थी जो गुलामी तथा हकूमती ज़ब्र के विरुद्ध उत्साह पैदा करने की पूर्ण योग्यता रखती है।

विदेशी सरकारों की तरफ से सिक्खों के इस उत्साह को कम करने की अनेकों योजनाएं बनाई गईं परंतु गुरु के सिक्ख अपने गुरु द्वारा दी गई सिक्ख परंपराओं पर पूरी दृढ़ता से पहरा देते हुए शहीदियां प्राप्त करते रहे। १९१९ ई को वैसाखी वाले दिन अंग्रेज़ों ने सैकड़ों भारतीयों को जलियां वाला बाग में शहीद कर दिया। २७ मार्च, १९२६ को होली वाले दिन ६ बब्बर अकालियों को फांसी के तख़्ते पर लटका कर शहीद कर दिया गया। भारी कष्टों को सहन करते हुए सिक्ख हमेशा पंथ एवं देश की चढ़दी कला के लिए कार्य करते रहे।

आधुनिक समय में होला-महल्ला की मौलिक भावना को उजागर करने की बहुत आवश्यकता है। समाज में फिर से बहुत-सी बुराइयां तथा कुरीतियां नया रूप धारण कर प्रचलित हो चुकी हैं। आज का मनुष्य दिन-प्रतिदिन इन कुरीतियों के प्रभाव की गुलामी झेल रहा है। आज फिर से ज़रूरत है जागृत होने की, इकट्ठा होकर बुराइयों से युद्ध करने की। हमारे सामने मादा भ्रूण-हत्या, नशे, नंगेज़, प्रदूषण, विदेशी हमले, मातृ-भाषा का त्याग, विदेश में जाने का रुझान, सभ्याचारक संगीत में गिरावट आदि जैसी अनेकों समस्याएं मुंह आड़े खड़ी हैं। इन बुराइयों के विरुद्ध लड़ने के लिए गांव-गांव, शहर-शहर में लोगों को जागृत करना पड़ेगा ताकि इन बुराइयों का विरोध करने वाले हर जगह पर गुरु साहिबान की शिक्षा के मुताबिक सुंदर समाज सृजने के लिए तैयार-बर-तैयार रहें। बुराइयों के मुकाबले के लिए हमें अपनी पुरातन परंपराओं से प्रेरणा लेकर समस्याओं को जड़ से उखाड़ने का प्रयत्न करना चाहिए ताकि होला-महल्ला पर गुरु साहिबान द्वारा हमें दिया संदेश सार्थक हो सके।

इन कार्यों के लिए हमें अपने पास के गुरुद्वारा साहिबान में संगती रूप में दीवान आयोजित करके भरपूर प्रयत्न करने चाहिए। कई गांव वाले मिलकर सांझी जगह पर ऐसी कोशिशें कर सकते हैं। बच्चे देश-कौम का भविष्य हुआ करते हैं। छोटे बच्चों को प्रेरणा देकर उनकी ज्यादा से ज्यादा शमूलियत इन समागमों में करवानी चाहिए। गांवों-महल्लों में खेल-मेले तथा गुरमति समागम आदि आयोजित कर लोगों को बुराइयों के विरुद्ध जूझने की प्रेरणा करें! इस तरह हम गुरमति विचारधारा की दिशा पर चलकर पंथक आन-शान तथा जाहो-जलाल से होला-महल्ला मनाकर मानवता की सेवा में अपना बनता योगदान डाल सकते हैं।

श्री गुरु नानक साहिब के हमसफ़र : भाई मरदाना जी

*-डॉ. कशमीर सिंह 'नूर'**

दुनिया में विलक्षण, विशेष पहचान वाले, उच्च कोटि के धर्म, सिक्ख धर्म के संस्थापक साहिब श्री गुरु नानक देव जी ने दुनिया के लोगों के दुख दूर करने हेतु, उन्हें अज्ञानता, अंधविश्वास के अंधेरे में से बाहर निकालने हेतु और उन्हें ज्ञान का दान देने हेतु अपनी चार उदासियों (धार्मिक यात्राएं) के दौरान देश-विदेश का लंबा सफ़र तय किया था। इन चारों उदासियों में भाई मरदाना जी ने जगत् गुरु श्री गुरु नानक देव जी का हमसफ़र, सहयात्री, सहयोगी बनकर सिक्ख इतिहास के साथ-साथ विश्व इतिहास में भी अपना नाम सुनहरी अक्षरों में अंकित करवा लिया। पूरे विश्व में जहां श्री गुरु नानक देव जी का नाम अति आदरपूर्वक व श्रद्धापूर्वक लिया जाता है, वहीं उनके हमसफ़र भाई मरदाना जी का नाम भी अति प्यार एवं सम्मान के साथ लिया जाता है। यह कोई छोटी बात या छोटी घटना नहीं है कि लगभग साठ वर्षों तक भाई मरदाना जी को श्री गुरु नानक देव जी की संगत में रहने का, उनका हमसफ़र बने रहने का सौभाग्य, सुअवसर प्राप्त हुआ।

भाई मरदाना जी का पहला नाम 'दाना' था। श्री गुरु नानक देव जी के संपर्क में आने पर उनका नाम 'मरदाना' प्रचलित हो गया। उनका जन्म ६ फरवरी, सन् १४५९ ई को गांव तलवंडी (राय भोय की) के निवासी तथा कथित चौबड़ जाति के मिरासी श्री मीर बादरा जी तथा माता बीबी लक्खो जी के गृह में हुआ। भाई मरदाना जी सच्चे पातशाह श्री गुरु नानक देव जी से उम्र में लगभग दस वर्ष बड़े थे। पैतृक संगीत परंपरा की बदौलत उन्हें संगीत की विरासत अपने घर में से मिली। वे रबाब भी बहुत अच्छा बजाते थे और गाते भी बहुत अच्छी व मधुर आवाज़ में थे।

भाई मरदाना जी की मित्रता गुरु जी से बचपन में ही हो गई थी। गुरु जी की ओर से मिले भरपूर सम्मान, प्यार के कारण यह मित्रता अंतिम सांस तक कायम रही। यह मित्रता जहां भाईचारे की भावना की उत्कृष्ट, सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है, वहीं सद्भावना के सिद्धांत को मज़बूत करने वाली उत्तम उदाहरण भी है। गुरु जी केवल शब्दों, वचनों द्वारा ही ऊंच-नीच, भेदभाव, जात-पात का विरोध नहीं करते थे अपितु अपने कार्यों तथा व्यवहार द्वारा भी इन बुराइयों के विरुद्ध लोगों को स्पष्ट संकेत, संदेश और उपदेश देते थे। भाई मरदाना जी को अपना संगी, अपना साथी बनाना, अपना सत्संगी बनाना इस संदर्भ में प्रस्तुत उम्दा मिसाल है।

भाई साहिब उच्च कोटि के संगीतज्ञ तो थे ही, वे गुरु साहिब के सच्चे, प्रिय, पक्के दोस्त भी थे। सुख-दुख के साथी होने के साथ-साथ भाई मरदाना जी श्री गुरु नानक देव जी की ओर से स्वीकृत प्रचारक भी थे। उन्हें गुरु जी की तरफ़ से कुछ विशेषाधिकार प्राप्त थे। इन

**बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो ९८७२२-५४९९०*

अधिकारों का उपयोग वे श्री गुरु नानक देव जी की बाणी के प्रचार तथा प्रसार हेतु किया करते थे। उनके द्वारा किए गए प्रचार व प्रसार ने अनेक जिज्ञासुओं को सिक्ख धर्म के साथ जोड़ा। इनमें भाई नीरू जी का नाम उल्लेखनीय है।

कुछेक साखी इतिहासकारों ने भाई जी को भूखे-प्यासे तथा दुखी मनुष्य के रूप में चित्रित-व्याख्यायित किया है। जो जगत्-गुरु सब दुखियों के दुख दूर करने वाला हो, भूखे प्राणियों की भूख-मिटाने वाला हो, प्यासे प्राणियों की प्यास बुझाने वाला हो, क्या उस महान् गुरु की संगत में रहने वाला कभी भूखा-प्यासा या दुखी रह सकता था? कदापि नहीं। प्रचार-यात्रा के दौरान जब गुरु नानक पातशाह जी की बिरती, लिव अकाल पुरख के साथ जुड़ती तो वे पड़ाव डाल लेते और भाई साहिब से संबोधित होते-- *"भाई मरदानिआ! रबाब बजा!! बाणी आई ए!!!"* और भाई साहिब गुरु जी का आदेश पाकर रबाब बजाने लगते।

सिक्ख धर्म में 'भाई' की उपाधि अति सम्मानित व उच्च कोटि की मानी जाती है। यह उपाधि प्रदान करते वक्त रिश्तों-नातों, जातियों, संबंधों, पदों को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता है। श्री गुरु नानक देव जी ने भाई मरदाना जी की समर्पण-भावना, गुण, उच्च व्यक्तित्व देखकर ही उन्हें 'भाई' की गौरवपूर्ण उपाधि बख़्शिश की थी।

भाई मरदाना जी को गुरु-घर का प्रथम कीर्तनिया (कीर्तन करने वाला) होने का गौरव-सम्मान दिया जाता है। कीर्तन करने की परंपरा उनके परिवार में लगातार चलती रही; आगे बढ़ती रही। पाकिस्तान के रहने वाले (दिवंगत) भाई लाल जी तथा भाई शाद जी का प्रसिद्ध कीर्तनी जत्था भी भाई मरदाना जी के घराने से संबंधित है। इस जत्थे को सिक्ख संगत काफ़ी सम्मान देती है।

मुंशी सुजान राय द्वारा लिखित 'खलासत-उत-तवारीख' में भाई मरदाना जी का विशेष वर्णन किया गया है। मुंशी राय लिखता है, "गुरु नानक देव जी का विशेष साथी (भाई) मरदाना (जी) नाम का रबाबी था। कीर्तन ने जन्म तलवंडी में ही लिया। एक बार पूछने पर गुरु जी ने कहा कि यह 'कीर्त' शब्द है, जि (जो) 'गुरु' कहता है, मन में सुरति कर समझे तिस की मुक्ति होय। साईं कीर्त-मुक्त है। यह कीर्त अर मुक्त एको है।"

गुरु जी ने तो प्रथम भेंट में ही भाई मरदाना जी से कहा था, "शबद पायकै राग को गाए तां (तो) तू मरदाना कहलाए।"

जगत्-गुरु, जगत् के सच्चे रहबर श्री गुरु नानक देव जी जगत् के कष्टों का निवारण करते हए जब अपनी चौथी उदासी के समय अफ़गानिस्तान के शहर कुरम (खुरम) में पहुंचे तो भाई मरदाना जी को अकाल पुरख का बुलावा आ गया। इस अवसर पर गुरु जी के हमसफ़र ने उनसे विदा लेनी चाही। गुरु साहिब ने भाई साहिब को अपने गले से लगा लिया। गुरु जी के बाहूपाश (गलबहिया) में ही उनके सच्चे हमसफ़र भाई मरदाना जी १२ नवंबर, सन् १५३४ ई. को इस भौतिक संसार से विदा हो गए। अपने सुख-दुख के साथी भाई मरदाना जी का अंतिम संस्कार श्री गुरु नानक देव जी ने अपने हाथों से दरिया कुरम के किनारे कर दिया। वहां पर आज भी भाई साहिब के वंशज उनकी स्मृति को संजोये बैठे हैं।

प्रथम पातशाह के अभिन्न सखा : भाई मरदाना जी

-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'*

भाई मरदाना जी वो महान् व्यक्तित्व हैं जिन्हें श्री गुरु नानक देव जी की निकटता जीवन भर प्राप्त रही। प्रथम पातशाह ने उन्हें सदा अपने साथ-साथ रखा।

जन्म एवं प्रारंभिक जीवन : भाई मरदाना जी श्री गुरु नानक देव जी से लगभग दस वर्ष बड़े थे। भाई साहिब का जन्म गुरु जी के ही गांव राय भोय की तलवंडी (ननकाणा साहिब), (पाकिस्तान) में फाल्गुन संवत् १५१६ बिक्रमी अनुसार सन् १४५९ ई में हुआ। भाई मरदाना जी के पिता का नाम भाई बादरा जी और माता का नाम बीबी लक्खो जी था। भाई जी मुसलिम थे और अपने माता-पिता की सातवीं संतान थे। पहले के छ: बच्चे पैदा होकर गुज़र गये थे। मां-बाप ने इस सातवीं संतान का नाम 'दाना' रखा। श्री गुरु नानक देव जी ने इन्हें एक नया नाम दिया-- 'मरदाना'।

प्रथम पातशाह के सखा : एक ही गांव के होने के कारण गुरु जी और भाई मरदाना जी में गहरी मित्रता थी। भाई जी को रबाब बजाने का गुण विरासत में मिला था। गुरु जी इनके सुंदर रबाब बजाने पर मोहित थे।

पिता श्री कलिआण चंद जी ने श्री गुरु नानक देव जी को नौकरी करने के लिए सुलतानपुर लोधी भेजा। गुरु जी वहां अपनी बहन बीबी नानकी जी और जीजा भाई जै राम जी के यहां रहने लगे और नवाब के मोदीखाने में नौकरी आरंभ कर दी। कुछ दिन गुज़रे तो पिता जी को सुपुत्र की चिंता हुई। उन्होंने भाई मरदाना जी को सुलतानपुर लोधी भेजा कि वे गुरु जी की राज़ी-खुशी की ख़बर लेकर आयें। भाई मरदाना जी सुलतानपुर लोधी क्या गये, गुरु जी के प्रेम में बंधकर खुद भी वहीं रह गये।

उदासियों में प्रथम पातशाह के सहयात्री : सुलतानपुर लोधी में ही श्री गुरु नानक देव जी ने मोदीखाने की नौकरी त्यागकर संसार के कल्याण के लिए उदासियां अर्थात् धर्म-प्रचार-यात्राएं करने का निश्चय किया। गुरु जी भाई मरदाना जी को इन यात्राओं में साथ ले जाना चाहते थे। भाई साहिब ने प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन श्री गुरु नानक देव जी के उद्देश्य के लिए अर्पित कर दिया। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि भाई मरदाना जी ऐसे पहले अनुयायी थे जिन्होंने अपना जीवन सिक्ख मत के लिए समर्पित किया।

उदासियों पर जाते समय बहन बीबी नानकी जी ने भाई मरदाना जी को रबाब ख़रीदकर दिया। भाई मरदाना जी गुरु साहिब की लगभग सारी प्रचार-यात्राओं में उनके साथ-साथ रहे। मार्ग के कष्ट, गर्मी-सर्दी, धूप-वर्षा आदि सब झेलते हुए गुरु जी के अंग-संग रहकर भाई मरदाना जी ने दूर-दूर के क्षेत्रों की यात्राएं की। विनम्र, जिज्ञासु, मिलनसार और पवित्र स्वभाव के भाई मरदाना जी सदैव गुरु जी की सेवा में तत्पर रहे। गुरु जी के हुक्म

*१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१; मो: ९४१७२-७६२७१

को मानने में भाई जी अपना तन-मन लगा देते। जन्म-साखियों में भाई मरदाना जी को गुरु जी के अत्यंत निकटवर्ती एवं अभिन्न सखा के रूप में दर्शाया गया है।

भाई मरदाना जी ने श्री गुरु नानक देव जी की रचनात्मक प्रफुल्लता में भी पूरा सहयोग दिया। जब भी गुरु जी के हृदय में बाणी का उदय होता, वे भाई मरदाना जी से कहते-- "भाई मरदानिआ! रबाब बजा, बाणी आई ए।" फिर भाई मरदाना जी रबाब के स्वर झंकृत करते और परम पवित्र बाणी श्री गुरु नानक देव जी के मुखारबिंद से उच्चारण होने लगती।

भाई मरदाना जी गुरु साहिब द्वारा उच्चारित बाणी का स्वयं भी गायन करते। इस प्रकार वे सिक्ख इतिहास के पहले कीर्तनिये भी सिद्ध होते हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में 'बिहागड़े की वार' में तीन सलोक भाई साहिब के नाम से दर्ज हैं :

कलि कलवाली कामु मदु मनुआ पीवणहारु ॥
क्रोध कटोरी मोहि भरी पीलावा अहंकारु ॥
(पन्ना ५५३)

अर्थात् कलयुगी स्वभाव वह बर्तन है जिसमें से काम और मद की शराब निकलती है। इस शराब को क्रोध की कटोरी में भरकर अहंकार मन को पिलाता है।

यह मानव की विकृतियों का अत्यंत सुंदर प्रतीकात्मक वर्णन है। अगले सलोक में कथन को आगे विस्तार दिया गया है :

मजलस कूड़े लब की पी पी होइ खुआरु ॥
करणी लाहणि सतु गुड़ु सचु सरा करि सारु ॥
(पन्ना ५५३)

अर्थात् यह संसार मिथ्या मज़लिस या महफिल है। इस कूड़ मज़लिस में मन अहंकार की मदिरा पी-पीकर ख्वार होता रहता है। इसलिए श्रेष्ठ कर्मों की 'लाहणि' अर्थात् भट्ठी बना, सच का गुड़ ले और सत्य के सार की शराब बना।

संदेश स्पष्ट है कि जीवन में से अहंकार आदि का त्यागकर और सद्कर्मों को अपना।

तीसरे सलोक में मनुष्य को श्रेष्ठ कर्म करते हुए सच्चे नाम को प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया गया है :

गिआनु गुड़ु सालाह मंडे भउ मासु आहारु ॥
नानक इहु भोजनु सचु है सचु नामु आधारु ॥
(पन्ना ५५३)

अर्थात् ज्ञान का गुड़, हरि-यश की रोटियां और प्रभु-प्रेम का आहार यही सच्चा भोजन है और यही जीवन का सच्चा आधार है।

प्रथम पातशाह के अभिन्न सखा : श्री गुरु नानक देव जी की जैसी निकटता भाई मरदाना जी को प्राप्त हुई वैसी कोई और नहीं पा सका। गुरु जी के बाल-सखा लगभग ४७ वर्षों तक गुरु जी के साथ रहे। सन् १५२४ ई में अफ़गानिस्तान की यात्रा के समय कुरम नदी के किनारे पर वृद्ध हो चुके ६५ वर्षीय भाई मरदाना जी ने अपनी नश्वर देह का त्याग किया। भाई साहिब का अंतिम संस्कार प्रथम पातशाह ने अपने हाथों से सम्पन्न किया था।

भाई मरदाना जी के वंशज भी निरंतर गुरु-घर की सेवा में रत रहे। भाई साहिब के सुपुत्र, जिनका नाम भाई सज़ादा जी था, दूसरे पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी के दरबार में रहकर कीर्तन किया करते थे।

इस प्रकार भाई मरदाना जी वे भाग्यशाली सिक्ख थे जिन्होंने अपना सारा जीवन प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी के साथ बिताया।

स्वाभिमान और स्वतंत्रता की भावना से ओत-प्रोत त्योहार : होला महल्ला

*-स. गुरप्रीत सिंघ भोमा**

हिंदोस्तान को जहां गुरुओं-पीरों, संतों-महात्माओं का देश होने का गौरव प्राप्त है, वहीं इसमें सामाजिक रूढ़ियों, वहमों-भ्रमों, पाखंडों आदि की भी खूब प्रधानता रही है। हिंदोस्तान में वर्ण-विभाजन की व्यवस्था भी पूरे यौवन पर अपना रंग दिखा चुकी है। वर्ण-भेदभाव का रंग इतना प्रगाढ़ हो चुका था कि इसके आधार पर मनुष्य तो बांट लिए, वृक्ष, पशु-पक्षी, यहां तक कि त्योहार भी बांट लिए गए। इसी वर्ण-विभाजन का शिकार हुआ त्योहार 'होली' भी है।

होली के त्योहार का संकेत बदी पर नेकी की विजय है। इसकी बुनियाद सत्य एवं प्रभु-भक्ति पर आधारित है। जनमानस ने सत्य एवं प्रभु-भक्ति की जीत को सही ढंग से मनाने की बजाए इसे गलत ढंग से मनाना शुरू कर दिया। लोगों ने खूबसूरत रंगों की जगह राख उड़ानी शुरू कर दी। फिर प्रत्येक वर्ष इसी तरह होली का जश्न राख उड़ाकर मनाया जाने लगा, यहां तक कि एक-दूसरे पर कीचड़, गोबर आदि भी फेंकना शुरू कर दिया। सद्भाव की दृष्टि से देखने की बजाए एक-दूसरे के सिर पर गंदगी आदि फेंककर, असभ्य हरकतें करके होली का त्योहार मनाया जाने लगा। बुराई को घृणा करने की जगह लोग स्वयं ही बुराई का रूप बनकर बुराई का प्रचार करने लगे। लोग होली के जोश में अपने होश तक गंवाने लगे और इसे वास्तविकता से कोसों दूर ले गए। यही कारण है कि भारत में ऐसे कई त्योहारों की पृष्ठभूमि बड़ी पावन एवं विशाल होने के बावजूद भी मानव जीवन के लिए सही दिशा-निर्देश देने में योगदान नहीं डाल सकी।

सिक्खों द्वारा त्योहार, उत्सव आदि मनाने का शुभारंभ तृतीय पातशाह श्री गुरु अमरदास जी के समय से हुआ है, जो कि दसवें गुरु साहिबान के समय में आकर पूर्ण रूप में विकसित हो गया। गुरु साहिबान ने जहां धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक सिद्धांतों में क्रांतिकारी परिवर्तन किया वहीं रूढ़िवादी रस्मों-रिवाजों को भी सही रूप प्रदान किया। गुरु साहिबान ने इस तरह के रीति-रिवाजों में कांट-छांट कर उन्हें एक सार्थक रूप दिया। इस तरह के त्योहार मनाती आ रही गुलाम हिंदोस्तानी जनता के दिलों में स्वाभिमान तथा बहादुरी की लहर दौड़ाने एवं सार्थक ज़िंदगी बख़्शने का कार्य शूरवीर योद्धा, साहिब-ए-कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के हिस्से आया, जिन्होंने संवत १७५७ ई में श्री अनंदपुर साहिब में होलगढ़ नामक स्थान पर अपने सिक्खों को बहादुरी एवं शौर्य की जीवन-जाच सिखाने हेतु अद्भुत नज़ारा पेश किया, जो कि 'होला-महल्ला' के नाम से विख्यात है।

होला-महल्ला सिक्खों का महत्त्वपूर्ण एवं विलक्षण त्योहार है। अन्य त्योहार तो पहले से ही मनाए जा रहे थे परंतु होला-महल्ला का आरंभ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय से ही हुआ। गुरु जी ने बता दिया कि खालसा को होली का बिगड़ चुका परंपरागत रूप स्वीकार नहीं है। यह होली नहीं होला मनाएगा, जो कि शारीरिक तंदरुस्ती के साथ-साथ बहादुरी, दिलेरी एवं स्वाभिमान का भी प्रतीक है। अल्ला यार खां 'योगी' ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की प्रशंसा में खूब कहा है :

करतार की सौगंध है, नानक की कसम है।
जितनी भी हो गोबिंद की, तारीफ वो कम है।१८।

**प्रूफ रीडर, गुरमति ज्ञान, मोः ९८७८५५८८५१*

'होला' और 'महल्ला' अलग-अलग भाषा के शब्द हैं। 'होला' संस्कृत भाषा का शब्द है, जबकि 'महल्ला' अरबी भाषा का शब्द है, जिनसे आशय है-- 'हमला' तथा 'हमले की जगह।' दशम पातशाह ने समय की नज़ाकत को भांपते हुए खालसा को युद्ध-विद्या में निपुण करने के लिए नई रीति चलाई। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा शारीरिक ताकत पैदा करने के लिए शिकार खेलना, तैराकी, घुड़सवारी, कुश्तियां करवाने के साथ-साथ गुरिल्ला युद्ध करना प्रारंभ करवा दिया। इसमें सिंघों के दो दल बनाए जाते थे। एक दल किसी स्थान पर काबिज हो जाता और दूसरा दल उस पर हमलावर होता। जिस दल को विजय प्राप्त होती दशम पातशाह उसे सिरोपा आदि देकर सम्मानित करते थे। इसके जरिए सिंघों के भीतर चढ़दी कला की भावना उजागर की जाती थी।

इसके अतिरिक्त श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जनमानस में आत्मिक बल पैदा करने के लिए पुरातन वीर-रस साहित्य को देशी भाषा में अनुवाद करवाकर साहित्य के साथ जोड़ा। आप जी के दरबार में बावन कवियों की मज़लस थी। इसका मुख्य लक्ष्य ऐसे वीर-रस भरपूर साहित्य की रचना करना था जो मुर्दा हुई हिंदोस्तान की जनता को शूरवीरता, गौरवता और प्रभु-भक्ति के साथ जोड़ दे। गुरु जी भली-भांति जानते थे कि अकेली शस्त्र-विद्या भी मनुष्य को संयमित रहने में बाधा डालती है, इसीलिए वो जालिम हाकिमों का दृढ़ता एवं शूरवीरता से मुकाबला करके मर-मिटने वाली कौम तैयार कर रहे थे, जो शास्त्र एवं शस्त्र-विद्या दोनों में निपुण हो। गुरु साहिब ने शास्त्रों एवं शस्त्रों के सुमेल से ऐसी कौम तैयार की जो कभी भी हार न माने। आप जी ने होला-महल्ला का सम्बंध कृपाणों, नेजों, तीरों आदि हथियारों के साथ जोड़ा। गुरु जी ने कृपाण मज़लूम की रक्षार्थ एवं स्वाभिमान के साथ जीने लिए उठाने की शिक्षा दी। इसी संदर्भ में आप जी का ज़फ़रनामा में पावन फरमान है :

चु कार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत ॥
हलालस्सत बुरदन ब शमशीर दसत ॥२२॥

अर्थात् जब हर कोशिश नाकामयाब हो जाए तो शमशीर (कृपाण) उठाना ही मुनासिब है। इसी सिद्धांत को मद्देनज़र रखते हुए गुरु जी ने होला-महल्ला मनाने की रीति चलाई।

विश्व-प्रसिद्ध लेखक गार्डन लिखता है-- "भारतीय जनता की मुर्दा अस्थियों में जान श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने डाली, क्योंकि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी में वो समस्त गुण मौजूद थे जो उस समय में सिक्ख कौम की सही अगुआई कर सकते थे।"

गुरु पातशाह ने कोई काम राजसी सत्ता या राजगद्दी प्राप्त करने हेतु नहीं किया। वे तो एक निर्भय कौम का निर्माण कर रहे थे, क्योंकि मुगल सरकार अपने स्वार्थ सिद्ध करने के लिए लोगों को पाखंडों, झूठे रीति-रिवाजों, वर्ण-विभाजन के गहरे गड्ढे में धकेलकर 'उलटी वाड़ खेत को खाने वाली' बात कर रही थी। गुरु जी ने जनमानस को आत्मिक एवं मानसिक बल प्रदान कर बहादुर कौम का निर्माण किया, जिसमें शामिल हो प्रत्येक हिंदोस्तानी गौरव एवं स्वाभिमान महसूस कर रहा था। जो मनुष्य पराधीनता में वहमों-भ्रमों की जंज़ीरों में जकड़ा, हाकिमों के भय तले जिल्लत भरी ज़िंदगी जी रहा था, अब वह हर मुश्किल का मुकाबला दृढ़ता एवं निर्भयता से करने लगा था। गुरु जी ने बुज़दिल, कायर, कमज़ोर लोगों में शूरवीरता भरकर, उनके ठंडे लहू को गरमाकर जुझारू लहर को जन्म दिया। यह एक महान एवं अद्वितीय क्रांति थी, जिसने भारतीय सभ्यता के झूठे रीति-रिवाजों की जंज़ीरों को काटकर गुरमति की बुनियाद पर नवीन संस्कृति का निर्माण किया। समय-समय पर सिक्खों पर कई उतार-चढ़ाव आते रहे, जिसमें सिक्ख और भी ज्यादा जुझारू होते गए। यह शूरवीरता की लहर, जो गुरु साहिबान के समय से चली आ रही है, न कभी खत्म हुई है और न ही कभी खत्म हो सकेगी।

शहीद भाई सुबेग सिंघ-भाई शाहबाज़ सिंघ

*-स. बलविंदर सिंघ जौड़ासिंघा**

बाबा बंदा सिंघ बहादर की शहादत के बाद मुगल हकूमत की तरफ से सिक्खों पर और भी सख़्ती शुरू हो गई। इसको इतिहास में सिक्खों पर घोर अत्याचारों का दौर कहा जाता है। घोर अत्याचारों का यह सिलसिला पंजाब में मिसलों के ताकतवर होने तक चलता है और महाराजा रणजीत सिंघ के राज्यकाल के समय कम हुआ। सिक्ख इतिहास के लिए जहां यह काला दौर था, वहीं सिक्खों के सुनहरी इतिहास का गवाह भी है। समकालीन मुगल हाकिमों द्वारा सिक्खों को जो कष्ट-यातनाएं दी गईं वह सिक्ख अरदास का भाग बनीं। सिक्खी सिदक की मिसाल को रोज़ाना इस तरह ध्यान धरने हेतु याद किया जाता है-- *"जिन्हां सिंघां सिंघणीआं ने धरम हेत सीस दित्ते, बंद-बंद कटाए खोपरीआं लुहाईआं, चरखड़ीआं 'ते चढ़े, आरिआं नाल चिराए गए, गुरदुआरिआं दी सेवा लई कुरबानीआं कीतीआं, धरम नहीं हारिआ, सिक्खी केसां सुआसां नाल निबाही, तिन्हां दी कमाई दा धिआन धरके खालसा जी, बोलो जी वाहिगुरू!"*

सिक्ख शहादतों की इस शृंखला में एक नहीं अनेकों नाम हैं जो वैरियों के साथ रण-भूमि में जूझते हुए शहीद हुए या समकालीन हाकिमों ने शहीद किए। इन शहीदों में दो नाम हैं-- भाई सुबेग सिंघ तथा भाई शाहबाज़ सिंघ।

भाई सुबेग सिंघ लाहौर ज़िले की चूहणीआं तहसील के गांव जंबर के रहने वाले थे। इनको भाई सुबेग सिंघ जंबर के नाम से भी जाना जाता है। भाई सुबेग सिंघ भजन-बंदगी करने वाले, रहित मर्यादा में परिपक्व, सिक्ख आचरण की प्रतिमा थे। वे पढ़े-लिखे तथा फ़ारसी के विद्धान थे। सरकार में उनकी अच्छी पहचान थी। अपने असर-रसूख के कारण वे ज़मीन आदि के ठेके सरकार से लेते थे। अपनी योग्यता तथा असर-रसूख के कारण वे लाहौर के कोतवाल भी नियुक्त हुए। इस जिम्मेदारी को उन्होंने श्रेष्ठ ढंग से निभाया। उस समय के दौरान लाहौर के निवासी बड़े खुश थे, क्योंकि माहौल शांति वाला बना रहा। भाई सुबेग सिंघ की सिक्खों में भी खास पहचान थी :

तुरक उसे खालसो वल तोरैं,
खालसा भी तिस को भल लोरैं।
कोई तुरकन परै ज़रूरी काम,
तौ उस भेजैं कर कर सलाम।

(श्री गुर पंथ प्रकाश)

सिक्खों के विरुद्ध अत्याचार रुकने का नाम ही नहीं ले रहा था। इन अत्याचारों ने सिक्खों को उनके उसूलों से टस से मस न किया। अत्याचारों का मुकाबला करते हुए सिक्ख और भी बलवान होते गए। मुगल सरकार सिक्खों के साथ निपटने के लिए अपनाये अपने कठोर व्यवहार से थक-हार गई थी। उसने सख़्ती से हटकर सिक्खों को जागीरें आदि देकर खुश करने की नीति अपनाई। १७३३ ई में लाहौर के गवर्नर जकरिया खां ने सिक्खों के प्रति सख़्ती के बारे में तथा अपनी मुश्किलों के सम्बंध में दिल्ली के बादशाह को खबरें भेजीं। उसने सुझाव दिया कि सिक्खों को जागीर दे दी जाये तथा उनके एक अगुआ को नवाब का ख़िताब दे दिया जाये। दिल्ली बादशाह ने जकरिया खां की सलाह मान ली। अब सिक्खों के साथ बातचीत कौन करे? इसकी जिम्मेदारी भाई सुबेग सिंघ पर डाली गई। भाई सुबेग सिंघ

**अपर सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर। मो: ९८१४८-९८२१२*

श्री अमृतसर में श्री अकाल तख़्त साहिब पर जुड़ बैठे सरबत्त खालसा के पास गये। सरकार से मेल-मिलाप करने के दोष में तनख़्वाह लगवाने तथा सज़ा भुगतने के बाद भाई सुबेग सिंघ ने लाहौर सरकार के प्रस्ताव के बारे में बात की। इस प्रस्ताव के अधीन सरकार द्वारा नवाब का ख़िताब तथा दियालपुर, कंगणवाला एवं झबाल परगनों की जागीर, जिसमें से एक लाख रुपये की वार्षिक आमदन होती थी, की पेशकश की गई। सिंघों ने इसको एकदम ठुकरा दिया। आखिर भाई सुबेग सिंघ की प्रेरणा से सिक्ख पंथ ने सरकारी पेशकश प्रवान कर ली। उस समय दीवान दरबारा सिंघ को नवाबी के लिए चुना गया, परंतु उन्होंने इंकार कर दिया और कहा, "इस नवाबी में क्या रखा है? हमें तो गुरु ने राज्य देने का वचन किया हुआ है। गुरु का वचन अवश्य पूरा होगा।"

हम को सतिगुर बचन पतिशाही,
हम को जापत ढिग सोऊ आही ॥३६॥
हम राखत पातिशाही दावा,
जां इतको जां अगलो पावा।
जो सतिगुर सिक्खन कही बात,
होगु साई नहिं खाली जात ॥३७॥

(श्री गुर पंथ प्रकाश)

अन्य प्रमुख सिंघों को भी नवाबी लेने के लिए कहा गया। सभी ने इंकार कर दिया। आखिर यह जिम्मेदारी गुणों तथा सेवा के पुंज एवं योद्धा स. कपूर सिंघ पर आ पड़ी। उन्होंने खालसा की आज्ञा से पांच सिंघों के चरणों को नवाबी की खिलअत स्पर्श करवाकर सिरोपा ले लिया :

सिंघ कपूर झलै पक्खो थोई,
क्रिपा नज़र पंथ उस वल होई ॥
पंच भुजंगीअन चरनी छुहाइ,
धरो सीस मोहि पवित्र कराइ ॥४७॥

(श्री गुर पंथ प्रकाश)

इस तरह भाई सुबेग सिंघ के यत्नों से कुछ समय के लिए पंजाब में माहौल ठीक हो गया। इन्हीं दिनों भाई सुबेग सिंघ के परिवार पर और मुसीबत आ पड़ी। उनका १८ वर्षीय नौजवान सुपुत्र भाई शाहबाज़ सिंघ था। वह एक इस्लामिक स्कूल में पढ़ता था; होनहार जवान, बहुत सुंदर एवं समझदार था। इस्लाम धर्म के सिद्धांतों के बारे में उसे बहुत जानकारी थी। वह अंतर-धर्म-दर्शन से पूर्णत: परिचित था। जिस मौलवी से वह विद्या प्राप्त करता था, वो उसे मुसलमान बनाकर अपनी लड़की का रिश्ता उसके साथ करना चाहता था। इसके लिए भाई शाहबाज़ सिंघ को प्रेरित किया गया। उसने मुसलमान बनने से इंकार कर दिया। उस पर झूठा आरोप लगाकर उसे पकड़ लिया। भाई सुबेग सिंघ को भी सिक्खों को गुप्त ख़बरें पहुंचाने का झूठा इलज़ाम लगाकर पकड़ लिया गया।

कुछ समय के लिए केस बंद रहा। जकरिया खां की मृत्यु के बाद उसका पुत्र यहीआ खां लाहौर का सूबेदार बना तो उसने लखपत राय को अपना दीवान बनाया। सिक्खों पर पुन: सख़्ती का दौर शुरू हो गया। मुल्लां-काजी एवं लखपत राय की उसकाहट पर भाई सुबेग सिंघ का केस दोबारा खोला गया। भाई सुबेग सिंघ तथा उनके सुपुत्र भाई शाहबाज़ सिंघ को गिरफ्तार कर लिया गया। यहीआ खां ने भाई सुबेग सिंघ तथा भाई शाहबाज़ सिंघ को अपना धर्म छोड़ने तथा मुसलमान बनने के लिए कहा। अन्य कई तरह के लालच दिए गये। इंकार करने पर चरखड़ी पर चढ़ाने का डर दिया :

कहयो नवाब तुम आवो दीन,
लेवो दाम औ काम औ ज़मीन ॥७॥
नहीं तो मरनों कर मनजूर,
चढ़ो चरख गिर होवो चूर।

(श्री गुर पंथ प्रकाश)

पिता-पुत्र दोनों ने इस्लाम धर्म को अपनाने से इंकार कर दिया और वे हर तरह की यातनायें सहन करने के लिए तैयार हो गये। भाई सुबेग सिंघ तथा भाई शाहबाज़ सिंघ ने कहा कि "जैसे आपको अपना धर्म प्रिय है, उसी तरह हमें भी

अपना धर्म प्रिय है। मरने का डर नहीं, मृत्यु तो कभी भी आ सकती है।" यहीआ खां ने दोनों को चरखड़ी पर चढ़ाने का फरमान काज़ी द्वारा जारी करवाया। पहले दोनों को बारी-बारी से चरखड़ी पर चढ़ाया गया। दोनों सिंघों ने अकाल पुरख की रज़ा में परमात्मा का सिमरन करते हुए यातनायें झेलीं :

ऊचे चाढ़ फिर बहुत घुमाया,
वाहिगुरू तिन नांहि भुलाया।
जयों जयों मुख ते गुरू उचारे,
अकाल अकाल कर ऊच पुकारे ॥१४॥

(श्री गुर पंथ प्रकाश)

पिता-पुत्र को अलग-अलग करके एक-दूसरे के मुसलमान बनने के बारे में अफवाहें फैलाई गईं। पुत्र को कहा गया कि "तेरी बालक-बुद्धि है। दुनिया देखने की तेरी उम्र है। तेरे पिता ने सब कुछ देख लिया है। तेरी खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने की उम्र है। तू बुद्धिमान हैं; फ़ारसी पढ़ा हुआ है, इसलिए जिद छोड़कर इस्लाम कबूल कर और सुख ले।"

दीन मुहंमदी कर कबूल तूं सरदारी बड पाहैं।
तूंतो पढ़यो फारसी अरबी बुद्धिवान दिसैहैं।
अभि नवेस कालेस एहु हठ छोड़ कयोन सुख लैहैं।
खाइ पैन लिय पिदर तुमारे बूढा मरनों चैहैं।
खाण पीण दी उमर तुमारी तूं कयों जिंदड़ीं देहैं।
मजब धरम पर मूरख मरहैं चत्रन मरते कोहै ॥

(पंथ प्रकाश, पृष्ठ ७३८)

दूसरी तरफ भाई सुबेग सिंघ को कहा कि "तू दीन मान ले तथा अपनी जड़ इस दुनिया में बनाये रख। पुत्रों से ही वंश चलती है। तेरी कुल का निशान रह जायेगा।" भाई सुबेग सिंघ ने कहा, "मैंने अपने सुपुत्र को गुरु-शिक्षा दी है कि प्रभु ही बचाता है और मारता भी वही है। ज़िंदगी से ज्यादा हमें अपना धर्म प्यारा है। धर्म गंवाकर जीने का कोई अर्थ नहीं। गुरु पातशाह ने हमारी खातिर चारों साहिबज़ादे वार दिए, सरवंस वार दिया। मैं धर्म त्याग कर अपनी कुल बचाए रखूं, यह कौन-सी कुल का यश है?"

सिक्खन काज सु गुरु हमारे,
सीस दीओ निज सन परवारै।
चारे पुतर जान कुहाए,
सो चंडी की भेट कराए।
हम कारन गुर कुलहि गवाई,
हम कुल राखैं कौण बडाई ॥२८॥

(श्री गुर पंथ प्रकाश)

पुनः यातनाएं दी जाने लगीं; केश ऊपर बांधे गये; चाबुक मार-मारकर चमड़ी उधेड़ दी गई; चरखड़ी पर दोबारा चढ़ाकर घुमाया गया। भाई शाहबाज सिंघ के मुंह से 'अकाल-अकाल' की ऊंची आवाज़ आती रही। आवाज़ कुछ धीमी पड़ी। वो निढाल हो गया। जल्लाद ने उससे पूछा कि "क्या इस्लाम कबूल है?" जल्लाद निढाल हुए भाई शाहबाज़ सिंघ का सर झुका हुआ देखकर समझा कि उसने 'हां' कर दी है। इस पर भाई सुबेग सिंघ की चरखड़ी रोक दी गई । पिता ने पुत्र की ओर देखा। पिता की आंखों में शहादत का नूर देखकर पुत्र की हिम्मत को और भी बल मिला। फिर सिर उठाकर उसने ऊंचे स्वर में जैकारा छोड़ा तथा अकाल-अकाल के नारे गूंजने लग गये। यहीआ खां तथा जल्लाद और गुस्से में आ गये। उन्होंने फिर तब तक चरखड़ी चलाई जब तक दोनों पिता-पुत्र अकाल पुरख को प्यारे नहीं हो गये। चरखड़ियों पर चढ़कर सिक्खी सिदक को केशों-श्वासों संग निभाने का समय १७४५ ई का था। यह भाई सुबेग सिंघ तथा भाई शाहबाज़ सिंघ की वीरता, अडोलता का प्रकटावा चरखड़ी को प्यार करते हुआ होता है, जब स्वयं कहते हैं-- "धन्य है चरखड़ी तथा धन्य है वह घड़ी, जब जीवन गुरु तथा धर्म के लेखे लगे।" फिर यही बोल फूटते हैं :

सुबेग सिंघ तब कुरनश करी,
धंन चरखड़ी धंन यह घरी ॥८॥
चाढ़ चरखड़ी हमैं गिरावो,

सो अब हम को ढील न लावो।
हम तो गुर के सिक्ख सदावैं,
गुर के हेत प्राण भल जावैं ॥९॥
(श्री गुर पंथ प्रकाश)

स्रोत-सूचना :

१. अठारहवीं सदी विच बीर परंपरा दा विकास, प्रिं. सतिबीर सिंघ, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९८७.
२. सिक्ख इतिहास, प्रिं तेजा सिंघ-- डॉ. गंडा सिंघ, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला १९८५.
३. श्री गुर पंथ प्रकाश कृत भाई रतन सिंघ (भंगू), संपादक डॉ. बलवंत सिंघ, सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर, २००४
४. पंथ प्रकाश, ज्ञानी गिआन सिंघ, भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला, १९८७.
५. महान कोश, भाई कान्ह सिंघ नाभा, भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला, १९८१.
*६. **History of the Sikhs, Dr. Hari Ram Gupta, Munshiram Manohar Lal, New Delhi, 1978.***
*७. **Sikh Martyrs, Bhagat Lakshman Singh, Lahore Book Shop, Ludhiana, 1981.***

कविता

जन्म से पहले मार न देना

कन्या करे पुकार कोख में, चाहे प्यार-दुलार न देना!
मम्मी-पापा इतना करना, जन्म से पहले मार न देना!
अबला अब नारी रही नहीं, अंतरिक्ष में उड़ती है।
देश-समाज के हर उत्थान में, साहस-हिम्मत से जुड़ती है।
बनकर जो वीरांगना, युद्ध-क्षेत्र में छाई थी।
माता भाग कौर थी जिसने, त्राहि-त्राहि मचाई थी।
मैं भी ऐसी वीरांगना बन, अपना फर्ज निभाऊंगी।
देश-धर्म की खातिर अपना, शौर्य खूब दिखाऊंगी।
स्वयं करूंगी रक्षा अपनी, बिल्कुल मेरा भार न लेना!
मम्मी-पापा इतना करना, जन्म से पहले मार न देना!
ज्ञात मुझे है दो मुंह वाला, यह जग-समाज है।
किसी डगर में नहीं सुरक्षित, महिला आज है।
जब से पता चला कोख में, कन्या का भ्रूण पल रहा।
माता-पिता के मन-मानस में, द्वंद संघर्षपूर्ण चल रहा।
यह कैसा विज्ञान समुन्नत, कैसी वैभव की संपन्नता ?
मसली कली खिलने से पहले, कुल्सित, क्रूर, कुटिल विपन्नता।
बंद करो ये हत्या भ्रूण की, आगे ऐसे संस्कार न देना!
मम्मी-पापा इतना करना, जन्म से पहले मार न देना!
भ्रूण परीक्षण अपराध जघन्य है, हत्या भ्रूण कानूनी फंदा।
बिना रिपोर्ट ही पनप रहा है, अल्ट्रासाउंड का गोरखधंधा।
मुझे पता है दहेज के लोभी, बिल्कुल नहीं लजाते हैं।
नित्य नई डिमांड करते हैं, ठुकराते और जलाते हैं।
किंतु क्रांति का बिगुल बजा, क्रांतिकारी बन जाऊंगी।
ऐसे लोगों से लोहा लूंगी, सलाखों में बंद कराऊंगी।
उचित नहीं होगा समाज को, नारी को सत्कार न देना!
मम्मी-पापा इतना करना, जन्म से पहले मार न देना!
रोशन होंगे मुझसे दोनों, पीहर और ससुराल पक्ष।
नारी बिन पुरुष अधूरा है, दो पहिये होते सबल दक्ष।
अस्पताल, दफ्तर, विद्यालय में, नारी ने कदम बढ़ाया है।
प्यार, समर्पण, ममता से, घर-घर को सुंदर बनाया है।
खलिहान, खेत, पशुपालन में, पुरुषों का साथ निभाया है।
शिशु-पालन, गृह-संचालन में, नारी ने नाम कमाया है।
सुखी बसे घर-आंगन मेरा, दुख-दर्दों का संसार न देना!
मम्मी-पापा इतना करना, जन्म से पहले मार न देना!

-डॉ. रमेश जैन, जनता अस्पताल, बुढलाडा, जिला मानसा-१५१५०२ (पंजाब), मो: ९८१५८३०३७३

स. बघेल सिंह की शूरवीरता की दासतां

*-स. गुरदीप सिंह**

स. बघेल सिंह ने १७ मार्च, १७८३ ई. को लाल किले पर खालसाई निशान (झंडा) साहिब भी लहराया एवं दिल्ली के ऐतिहासिक गुरुद्वारों का निर्माण भी करवाया।

स. बघेल सिंह की गणना १८वीं सदी के महान सिक्खों में की जाती है। वे एक महान योद्धा, नीतिवान और दूरदर्शी नेता थे। निजी स्वार्थों के स्थान पर वे सिक्ख पंथ को प्राथमिकता देते थे। अपने राजनीतिक क्षेत्र के विस्तार और गुरुधामों की सेवा-संभाल के साथ-साथ उन्होंने सिक्खी के प्रचार के लिए भी बहुत योगदान दिया। भाई कान्ह सिंह नाभा लिखते हैं कि "सिक्ख उनके जत्थे से अमृत-पान करने को बहुत सम्मान की बात मानते थे।"

स. बघेल सिंह गांव झबाल, ज़िला श्री अमृतसर के रहने वाले थे। उनका जन्म १७२५ ई. के आस-पास हुआ था। स. बघेल सिंह सिक्खों की बारह मिसलों में से करोड़ासिंघीआ मिसल के जत्थेदार थे। इस मिसल का मुखिया स. शाम सिंह सन् १७३९ में नादिर शाह के विरुद्ध लड़ते हुए शहीद हो गया था। उसके बाद इस मिसल की बागडोर स. करम सिंह और उसके बाद स. करोड़ा सिंघ, गांव पैजगढ़ ने संभाली। उसके नाम से ही इस मिसल का नाम 'करोड़ासिंघीआ' प्रसिद्ध हो गया। जब स. करोड़ा सिंघ अहमद शाह अब्दाली के विरुद्ध हुई लड़ाई में शहीद हो गए तो स. बघेल सिंह के पंथक जज़्बे और योग्यता को ध्यान रखते हुए उन्हें करोड़ासिंघीआ मिसल का जत्थेदार बना दिया गया। स. बघेल सिंह इस मिसल के सबसे शक्तिशाली जत्थेदार बनकर उभरे।

जत्थेदारी का कार्य-भार संभालते ही उन्होंने जलंधर-दुआबा में अपना दबदबा कायम कर लिया। जलंधर, अंबाला और हरियाणा के उत्तरी-पश्चिमी इलाकों पर अपना अधिकार स्थापित करने के बाद छलौदी नामक स्थान को उन्होंने अपना हेडक्वार्टर बनाया। उन्होंने पूर्वी पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के कई नगरों पर अपना कब्ज़ा किया। जब तक अहमद शाह अब्दाली हिंदोस्तान (विशेषकर पंजाब) पर हमले करता रहा, सिक्ख मिसलदार एक-दूसरे की बढ़-चढ़कर मदद करते रहे। उनका निशाना दुश्मन को हराना और उसे अपने देश से खदेड़ना था। स. बघेल सिंघ ने ४०,००० सिंघों की सेना सहित बूड़ीए के पत्तण से यमुना पार की और सहारनपुर पर हमला बोल दिया। घमासान लड़ाई के बाद २० फरवरी, १७६४ ई. को सिक्खों ने इस नगर पर अपना अधिकार जमा लिया।

स. बघेल सिंह के सिक्ख मिसलदारों के साथ अच्छे संबंध थे। यही कारण है कि उनकी फौजी मुहिम के समय कई बार स. जस्सा सिंह आहलूवालिया और स. जस्सा सिंह रामगढ़िया जैसे सिक्ख सरदार भी उनके साथ होते थे। जब अहमद शाह अब्दाली सियालकोट और पंजाब के अन्य इलाकों से सैकड़ों स्त्रियों को बंदी बनाकर काबुल की तरफ वापिस जा रहा था तब स. बघेल सिंघ, स. जस्सा सिंह आहलूवालिया, स. चढ़त सिंघ शुकरचक्कीआ उसकी फौज पर

**३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; मो: ९८८८१२६६९०*

टूट पड़े और हिंदोस्तानी औरतों को उसके चंगुल से छुड़वा लिया।

सन् १७७३ में स. बघेल सिंघ ने यमुना पार के इलाके जलालाबाद पर हमला किया। यहां का हाकिम सैयद मीर हसन खां बड़ा ज़ालिम और अय्याश तबीयत का व्यक्ति था। उसने अपने घर में एक ब्राह्मण परिवार की लड़की को ज़ब्रदस्ती रखा हुआ था। ११ दिसंबर, १७३३ ई को हुई लड़ाई में मीर हसन मारा गया। स. बघेल सिंघ ने उस लड़की को छुड़वाकर और 'खालसे की पुत्री' का सम्मान देकर उसके मां-बाप के घर भेज दिया। सैय्यद को मारने के बाद सिक्खों ने उस दलाल को भी सज़ा दी जो पैसों के लालच में दूसरों की बेटियों का पता लगाकर सरकारी अधिकारियों को दिया करता था।

इसके बाद स. बघेल सिंघ की कमान तले खालसा फौज अलीगढ़, खुर्जा, चंदौसी, हाथरस, इटावा पर फ़तहि प्राप्त कर जलालाबाद पहुंच गई। यहां का नवाब ईसा खां तीन दिन तक मुकाबला करने के बाद मैदान छोड़कर भाग गया। फरुखाबाद पर कब्ज़ा हो जाने के बाद खालसाई फौज मुरादाबाद, अनूप शहर, बुलंद शहर, बिजनौर आदि के हाकिमों पर अधिकार करती हुई, उनसे नज़राने आदि वसूल करने के बाद वापिस पंजाब आ गई।

३१ अक्तूबर, १७७० ई. को नजीब-ऊ-दौला की मौत के बाद उसका पुत्र जाबता खां गंगा-यमुना, दुआबा के इलाके का हाकिम बन गया। स. बघेल सिंघ ने अपने साथी स. राए सिंघ और स. तारा सिंघ घेबा (कंग) के साथ सन् १७७५ में उसके इलाके पर धावा बोल दिया। अपनी हार से डरते हुए ५०,०००/- रुपए का नज़राना भेंट करके उसने सिक्खों की अधीनता स्वीकार कर ली। जब राजा अमर सिंघ पटियाला ने स. बघेल सिंघ के इलाके को हथिया लिया तो स. बघेल सिंघ ने फौज के साथ उस पर हमला कर दिया। स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया और स. चैन सिंघ वकील द्वारा बीच-बचाव करने के कारण राजा अमर सिंघ ने इलाके वापिस कर दिए। राजा अमर सिंघ ने अपने सुपुत्र साहिब सिंघ को स. बघेल सिंघ के जत्थे से अमृत छकाकर अमृतधारी बना दिया। इस प्रकार दोनों में सदा के लिए मित्रता हो गई। १७६५ ई से लेकर १७८७ ई तक सिक्खों ने दिल्ली पर पंद्रह बार हमला किया। (हवाला डॉ. हरी राम गुप्ता, **Impact Of The Sikhs On Delhi, 1765-1787**) इसमें ज्यादातर हमले करोड़ासिंघीआ मिसल के जत्थेदार स. बघेल सिंघ ने किए।

दिल्ली के तख़्त पर शाहआलम (दूसरा) का राज्य था। दिल्ली पर पहला हमला १८ जनवरी, १७७४ ई को किया गया। अपनी फौज के किए राशन-पानी और आर्थिक ज़रूरतों को पूरा करने के लिए वे शाहदरा के अमीर व्यापारियों से नज़राना आदि लेकर वापिस पंजाब आ गए। वापिस आते हुए उन्होंने दिऊबंद (देवबंद) पर हमला किया और गौसगढ़ के नवाब से ५०,०००/- रुपए वार्षिक वसूल किए।

दिल्ली पर दूसरा हमला स. बघेल सिंघ ने १५ जुलाई, १७७५ ई को किया। इस बार स. बघेल सिंघ के साथ स. तारा सिंघ घेबा (कंग) और स. राए सिंघ भी थे। इस बार उनकी फौज शहर की घनी आबादी वाले इलाके पहाड़गंज और जय सिंह पुरा (मौजूदा गुरुद्वारा बंगला साहिब वाला स्थान) तक पहुंच गई। यहां पर खालसा फौज की मुगल सेना के साथ झड़प हुई, जिसमें शाही फौज मात खाकर लाल किले की तरफ भाग गई।

१२ अप्रैल, १७८१ ई को स. बघेल सिंघ ने दिल्ली से ३२ किलोमीटर दूर बागपत पर हमला

कर दिया। मुगल बादशाह शाहआलम ने सिक्खों के दिल्ली के आसपास लगातार हो रहे हमलों के डर से उनके साथ एक संधि कर ली, जिसके अनुसार गंगा-यमुना के बीच के इलाकों पर उनके अधिकार को मान लिया गया। दिल्ली के लाल किले पर सफल हमला करने से पहले स. बघेल सिंघ ने एक बार फिर गंगा-यमुना-दुआब के कई नगरों पर हमला कर दिया। शाहआलम से संधि हो जाने के बावजूद भी इस इलाके ने सिक्खों को अपनी आय का ८वां हिस्सा नहीं दिया था। फरवरी, १७८३ ई में स. बघेल सिंघ ने अलीगढ़, टुंडला, हाथरस, खुर्जा, शिकोहाबाद, फरुखाबाद आदि नगरों पर धावा बोल दिया। स. बघेल सिंघ ने एकत्र धन में से एक लाख रुपया श्री हरिमंदर साहिब (श्री अमृतसर) की इमारत के पुनर्निर्माण के लिए भेज दिया, जिसको बड़े घल्लूघारे के समय अहमद शाह अब्दाली ने तोपों द्वारा नष्ट कर दिया था।

८ मार्च, १७८३ ई को स. बघेल सिंघ बड़ी संख्या में सिक्ख फौज लेकर दिल्ली में प्रवेश कर गया। इस बार स. बघेल सिंघ को स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया, स. जस्सा सिंघ रामगढ़िया और स. राए सिंघ जैसे सिक्ख सरदारों का समर्थन प्राप्त था। खालसा फौज ने पहले मलकागंज, मुगलपुरा और सब्ज़ी मंडी के इलाकों पर अपना अधिपत्य जमाया। मुगलपुरा में शाहआलम की तरफ से भेजे गए शहज़ादा मिर्जा शिकोह ने सिक्खों को किला महिताबपुरा के स्थान पर रोकने की कोशिश की, पर वह हार खाकर लाल किले की तरफ भाग गया। खालसा फौज ने लाल किले पर चढ़ाई कर दी। दूसरे दल ने अजमेरी गेट की तरफ से शहर पर हमला कर दिया। सिक्खों के आने की ख़बर सुनकर मुगल दरबारी और शाहआलम मुकाबला करने के स्थान पर अंदरूनी भागों में जा छिपे। स. बघेल सिंघ अपनी विजयी फौज के साथ ११ मार्च, १७८३ ई को लाल किले के अंदर दाख़िल हो गया। दीवाने-आम पर कब्ज़ा कर लेने के बाद किले के मुख्य द्वार पर केसरी निशान झुला दिया गया। दीवाने-आम में दरबार लगाकर दल के बुजुर्ग नेता स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया को 'सुलतान' घोषित कर दिया। इनके साथ पांच मुख्य सरदारों को बिठाया गया, जिनकी अगुआई में दिल्ली को जीता गया था। *(हवाला डॉ. हरी राम गुप्ता, हिस्टरी आफ दी सिक्ख और ज्ञानी गिआन सिंघ, तवारीख गुरू खालसा)* लाल किले पर कब्ज़ा हो जाने के बाद शाहआलम ने अपने वकील राम दयाल और बेगम समरू द्वारा सिक्ख सरदारों के साथ समझौते की बात चलाई। बेगम समरू ने स. बघेल सिंघ को भाई बनाकर दो बातों की मांग की :-

१. शाहआलम की ज़िंदगी को कोई नुकसान न पहुंचाया जाए।

२. लाल किले पर शाहआलम का अधिकार बना रहने दिया जाए।

इन दो मांगों के बदले में स. बघेल सिंघ ने दिल्ली में सिक्ख ऐतिहासिक गुरु-स्थानों की प्राप्ति और उन पर यादगार कायम करने को तरजीह दी। शाहआलम के आगे चार शर्तें रखी गईं, जिनमें पहली शर्त के मुताबिक-- "दिल्ली के वे सारे स्थान जिनका संबंध गुरु साहिबान की दिल्ली फेरी और श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत से जुड़ा हुआ है, खालसा को सौंप दिए जाएं।"

दूसरी शर्त के अनुसार-- "समस्त स्थानों की निशानदेही हो जाने के बाद खालसा पंथ को अपने गुरु साहिबान की यादगारें स्थापित करने में कोई रुकावट न खड़ी की जाए।"

तीसरी शर्त के अनुसार-- "शहर की कोतवाली खालसा के सुपुर्द की जाए और दिल्ली

में माल की बिक्री से एकत्रित होने वाली चुंगी में से एक रुपए में से छ: आने के हिसाब से सिक्खों को पैसा दिया जाए और यह रकम गुरुद्वारों के निर्माण के लिए खर्च की जाए।"

चौथी शर्त के मुताबिक-- "जितनी देर तक दिल्ली के गुरुद्वारे स्थापित नहीं हो जाते, ४,००० सिक्ख सैनिक दिल्ली में रहेंगे और इन सिक्खों का खर्च शाही खज़ाने में से ही किया जाए।"

इन गुरुद्वारों को स्थापित करने के लिए स. बघेल सिंघ अप्रैल, १७८३ ई से लेकर नवंबर, १७८३ ई. तक दिल्ली में ही रहे।

शाहआलम के बदले हुए व्यवहार के कारण जनवरी, १७८५ ई में एक बार फिर स. बघेल सिंघ ने दिल्ली पर हमला किया। उनके साथ स. गुरदित्त सिंघ और स. जस्सा सिंघ रामगढ़िया थे। इस बार मराठा सरदार अंबाजी मुगल बादशाह शाहआलम की मदद के लिए उसके साथ था। स. बघेल सिंघ ने दोनों की संयुक्त फौज को हराकर एक बार फिर भारी नज़राना वसूल किया। ३० मार्च, १७८५ ई. को उसके साथ संधि पर हस्ताक्षर किए, जिस कारण उसने दस लाख रुपए वार्षिक स. बघेल सिंघ को देना मंजूर कर लिया। इस संधि पर हस्ताक्षर करते समय स. बघेल सिंघ के साथ स. करम सिंघ, स. दीवान सिंघ, स. मोहर सिंघ आदि सिक्ख सरदार थे। जब तक स. बघेल सिंघ ज़िंदा रहे मुगल बादशाह की तरफ से १० लाख रुपए की वार्षिक रकम नियमित रूप से उनको मिलती रही।

स. बघेल सिंघ का देहांत १८०२ ई. में हुआ। उनकी यादगार हरियाणा (ज़िला होशियारपुर) में है। वे एक महान योद्धा थे। उनकी पावन याद में दिल्ली में गुरुद्वारा बंगला साहिब में 'बाबा बघेल सिंघ अजायब घर' स्थापित है, जिसे देखने के लिए देश-विदेश से हज़ारों की तादाद में संगत आती है। स. बघेल सिंघ का जीवन सिक्खी की महान घटनाओं में से एक ऐसी मिसाल है जिस पर सिक्ख कौम सदा गर्व करती रहेगी।

कविता

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की यशो-गाथा

कुर्बानियों का वो अंबार दे गया।
बैठे-बिठाये हमको बहुत प्यार दे गया।
आपस में होंगे झगड़े ताज के लिए,
इसलिए हर इक को दसतार दे गया।
आध्यात्मिक और राजनीतिक जीवन गुज़ार के,
संत और सिपाही का आधार दे गया।
देह नश्वर है 'शबद' को गुरु मानो,
गुरु ग्रंथ साहिब का हमको उपहार दे गया।
ऊंच और नीच का भेद मिटाने के वास्ते,
लंगर की रिवायत का प्रचार दे गया।
जीना है असल में तो मरना सत्य समझो,
ज़िंदगी के फलसफे का सार दे गया।
अन्याय का विरोध न करना भी गलत है,
इस बात का प्रमाण बार-बार दे गया।
शहादत से चमकती हैं सदियों तक पीढ़ियां,
इसलिए शहादत के त्योहार दे गया।
संघर्ष का जज्बा हरदम बना रहे,
इंसानियत का सबको विस्तार दे गया।

-स. गगनदीप सिंघ, बुधवारीपारा, डोंगरगढ़ (छत्तीसगढ़)- ४९१४४५, मो: ९३००६-७३९३९

अद्वितीय वीर योद्धा : अकाली फूला सिंह शहीद

-डॉ. शमशेर सिंघ

अकाली फूला सिंघ दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा सृजित अकाली बाग के सुंदर तथा सुगंधी भरपूर फूल थे। यह अद्वितीय शख़्सियत *'हम ले जानो पंथ उचेरे'* के सिद्धांत के ताज़दार पंथ के आदर्श एवं मानवीय उसूलों के आलम-बरदार, पंथक एकता के मुद्दई, समानता के उपासक थे। दैवी जीवन-मूल्यों के समर्थक, सिक्ख जीवन-जाच के प्रकाश-स्तंभ, संत-सिपाही, जांबाज़ अकाली जी सम्बंधी इतिहास में अति संक्षिप्त विवरण देखकर आश्चर्य होता है। ऐसे वीर योद्धा के साथ ऐसा अन्याय क्यों हुआ है? समझ से बाहर तो नहीं कहा जा सकता परंतु अवश्य इसमें किसी विशेष राज की संभावना को आंखों से ओझल भी नहीं किया जा सकता। श्री अकाल तख़्त साहिब के सिद्धांत तथा इसके संस्थागत रूप को ऊंचा उठाने वाली शख़्सियतों को जान-बूझकर आंखों से ओझल किया गया लगता है।

अकाली फूला सिंघ का जन्म बांगर इलाके के गांव सीहां निवासी स. ईशर सिंघ के घर संवत् १८१८ में हुआ। उनका जीवन गुरबाणी के उसूलों, निष्काम सेवा, सिमरन तथा जरूरतमंदों की हर समय सहायता करने को समर्पित था, इसलिए क्षेत्र में उनका बड़ा मान-सम्मान था। पंथक सोच उस समय शक्ति प्राप्त करके अपने राजसी लक्ष्य की ओर बढ़ रही थी। उभर रही चेतना तथा शक्ति को शासकों द्वारा हर कीमत पर दबाने या जड़ से खत्म कर देने के भारी यत्न जारी थे।

संघर्ष के लिए हर वक्त तैयार-बर-तैयार रहना पड़ता है। अहमद शाह अब्दाली के छठे हमले के समय भाई ईशर सिंघ गंभीर जख़्मी हुए। गंभीर जख़्मों की संभाल न होने के कारण हालत खतरे वाली हो गई। अपना अंतिम समय समीप जानकर अपने सतसंगी बाबा नरैण सिंघ ('पंथ प्रकाश' में इनका नाम 'नैणा सिंघ लिखा है) को इस बालक (अकाली फूला सिंघ) की बांह पकड़ाते हुए कहा कि इसको अपना बच्चा जानकर पंथक सेवक बनाने की जिम्मेदारी अब आपके जिम्मे लग गई है। बाबा नरैण सिंघ शहीदां वाली मिसल के प्रसिद्ध सेवक थे। इस तरह शहीदां वाली मिसल के साथ इस बालक का पक्का सम्बंध जुड़ गया। बाबा जी अपना जीवन बेमिसाल कुर्बानी तथा जीवन-जांच का मुजस्समा था। उन्होंने अकाली फूला सिंघ को गुरबाणी की संथ्या के साथ-साथ शस्त्र-विद्या में भी निपुण कर दिया। बाबा जी की चुंबकीय शख़्सियत के प्रभाव से वे संत-सिपाही वाले गुणों में परिपक्व हो गये। माता जी के देहांत के बाद वे पूर्ण रूप में शहीदां वाली मिसल में शस्त्रधारी लिबास पहनकर शामिल हो गये तथा श्री अनंदपुर साहिब आ गये। यहां उनका बहुत-सा समय गुरुधामों की सेवा-संभाल में ही बीता। जितना उनका धार्मिक विश्वास ऊंचा होता गया उतना ही उनका मान-सत्कार एवं रुतबा भी बढ़ता गया। यहां तक कि बाबा नरैण सिंघ के परलोक गमन कर जाने के बाद बाबा जी के जत्थे का जत्थेदार अकाली फूला सिंघ को बना

दिया गया। संवत् १८५७ में अकाली फूला सिंघ श्री अमृतसर आ गये। यहां गुरुधामों में सेवकों की आपसी विरोधता के कारण प्रबंध में अधोगति आ गई थी। उन्होंने अपनी निगरानी तले सुयोग्य प्रबंध किया।

संवत् १८५८ में भंगी सरदारों तथा महाराजा रणजीत सिंघ की फौजों के मध्य श्री अमृतसर पर कब्ज़े के लिए होने वाला युद्ध अकाली जी के मध्यस्थ बनकर समझाने पर कि "गुरु-नगरी में दोनों दलों का लड़ना मुनासिब नहीं" टल गया। दोनों दलों ने उनके सम्मान एवं उनकी नेक सलाह को मुख्य रखते हुए जंग बंद कर दी। अपनी बुद्धिमता से महाराजा रणजीत सिंघ ने श्री अमृतसर पर कब्ज़ा कर लिया तथा अकाली जी के जत्थे के खर्च के लिए जागीर लगवाई।

महाराजा रणजीत सिंघ अकाली फूला सिंघ के बेलाग तथा निष्पक्ष विचारों के प्रशंसक थे। उन्होंने जब भी जरूरत महसूस की अकाली जी से जंगी सहायता प्राप्त की। कसूर की जीत में अकाली जी ने लाहौर दरबार की भरपूर सहायता की। संवत् १८६६ में अकाली जी कुछ समय के लिए दमदमा साहिब (तलवंडी साबो) जाकर रहे। वहां के गुरुधामों में प्रबंध के सुधार की जरूरत थी, उसकी पूर्ति की। कुछ इतिहासकारों का मत है कि लाहौर दरबार में हर पक्ष से बढ़ रहे डोगरा प्रभाव से दुखी होकर अकाली जी ने महाराजा रणजीत सिंघ को सुचेत किया। ऐसे हालात में अपनी नाराज़गी का प्रकटावा करने के लिए अकाली जी श्री अनंदपुर साहिब चले गये। महाराजा ने बाबा साहिब सिंघ (बेदी) को अपने पास बुलाकर विनती की कि जैसे भी हो अकाली जी को श्री अनंदपुर साहिब से श्री अमृतसर वापिस ले आओ। जब बाबा (बेदी) जी उनके पास जा हाज़िर हुए तो उन्होंने पंथक एकता तथा सत्कार को मुख्य रखते हुए जत्थे सहित श्री अमृतसर के लिए प्रस्थान कर दिया। उनके गुरु-नगरी में पहुंचने के उपरांत महाराजा कई अहलकारों सहित श्री अमृतसर आए तथा जत्थे के लिए बहुत सारे हथियार, पचास घोड़े, दो हाथी एवं अन्य सामान अकाली जी को भेंट किया। लंगर के लिए जागीर में काफी बढ़ावा किया तथा और बैरिकें बनाने का आदेश दिया। इन बैरिकों की वृद्धि के कारण इसका नाम 'निहंगां दी छाउणी' (निहंगों की छावनी) पड़ गया।

संवत् १८७३ में महाराजा रणजीत सिंघ ने इलाका मुलतान तथा भावलपुर पर चढ़ाई करने की योजना बनाई। अकाली फूला सिंघ तथा स. फ़तहि सिंघ आहलूवालिया की निगरानी में फौजों को दरिया सिंध के रास्ते भेजा तथा खुद दूसरे रास्ते से खानगढ़ में मिलने का फैसला किया। अकाली फौजों ने पहुंचकर वक्त खराब की बजाय कुछेक दिनों में ही खानगढ़ के किले पर कब्ज़ा कर लिया। यह हमला इतनी तेजी तथा फुर्ती से किया गया कि दुश्मन संभल ही न सके। यहां पर ही महाराजा रणजीत सिंघ अकाली जी को मिले और इस हुई फ़तहि तथा किये योग्य प्रबंधों के लिए अकाली जी पर बहुत प्रसन्नता का इज़हार किया। यहां से फुरसत पाकर अकाली जी ने झंग की तरफ चढ़ाई की। इस इलाके के हाकिम अहमद ख़ान के हाथों प्रजा बहुत परेशान थी। महाराजा के खानगढ़ के पड़ाव के समय इलाके के सज्जनों ने अपने हाकिम की शिकायतें की थीं। उसको योग्य सज़ा देने के लिए महाराजा ने अकाली फूला सिंघ को उधर भेजा। अपनी तेज-तरीन रणनीति के अनुसार झंग के किले को झटपट घेर लिया।

एक छोटी-सी झड़प के बाद अहमद ख़ान को कैद करके लाहौर भेज दिया। इसका सारा इलाका, जिसका चार लाख वार्षिक मालिया था, खालसा राज्य में मिला लिया गया।

लाहौर दरबार द्वारा संवत् १८७४ में मुलतान को खालसा राज्य में मिलाने के लिए २५,००० की फौज का दल शहज़ादा खड़क सिंघ के नेतृत्व में भेजा गया। खालसा दल की आती फौज से नवाब मुजफ्फर खान ने सुचेत होकर अपने किले की मज़बूती तथा फौज का सख़्त सामना करने के लिए विशाल प्रबंध किए। नवाब अपने पुत्रों सहित २०,००० सैनिकों की फौज के साथ शहर एवं किले को बचाने के लिए डटा हुआ था। पांच दिन तक घमासान लड़ाई हुई, परंतु परिणाम कोई न निकल सका। रात के अंधेरे में शहर की दीवार के नीचे बारूद दबाने की योजना बनी। चाहे वर्षा हो जाने के कारण इस कार्य में देरी हुई परंतु फिर भी खालसा फौजों ने शहर की दीवार में छोटी-बड़ी दरारें डाल दीं। भारी तोपों से निरंतर एक जगह पर ही गोले दागने के कारण थोड़ा-सा रास्ता खुल गया। उस जगह पर तुरंत घुड़सवारों का हमला करवाया गया। बड़ी भयानक टक्कर हुई तथा अंत में रण खालसा के हाथ रहा। शहर पर खालसा फौज का कब्ज़ा हो गया। अब खालसा फौजों द्वारा मुलतान के बहुत ही मज़बूत किले को घेरा डाला गया। भारी तोपखाने का प्रयोग किया गया परंतु किले की दीवारों पर कोई असर न हुआ। अंदर किले में से भी भारी गोलाबारी का सामना करना पड़ रहा था। इसी कारण घेरा बहुत लंबा हो गया। महाराजा चिंतातुर थे। वे विशेष रूप से श्री अमृतसर आए। श्री हरिमंदर साहिब में अरदास की तथा अकाली फूला सिंघ को मुलतान की मुहिम पर विशेष रूप से शामिल होने की विनती की। अकाली जी ने अपने पांच सौ कुशल योद्धाओं को साथ लेकर ११ ज्येष्ठ, संवत् १८७५ को मुलतान की तरफ कूच किया और १८ ज्येष्ठ को मुलतान पहुंच गए। अकाली जी के पहुंचने से जैसे खालसा फौजों में नई रूह फूंकी गई हो। भंगियों वाली प्रसिद्ध तोप 'ज़मज़म' को किले के खिज़री दरवाजे के सामने तैनात किया गया। उससे गोले बरसाने से किले की दीवार में दरार पड़ गई। आसमानी बिजली की तरह अकाली सिंघों ने अकाली फूला सिंघ के नेतृत्व में किले में पड़ी दरार के जरिए हमला किया तथा कुछ मिनटों में ही किले के भीतर दाख़िल हो गये। भयंकर रक्त-रंजित लड़ाई हुई। अकाली जी के एक ज़ोरदार वार से मुज़फ्फर ख़ान ढह-ढेरी हो गया। अपने जरनैल को मरता हुआ देखकर गाज़ियों के पांव उखड़ गये। उनके हौसले पस्त हो गए। खालसा ने भागे जाते गाज़ियों को खूब सोधा। इस भयानक लड़ाई में नवाब के पांच पुत्रों समेत १२ हज़ार से ज्यादा पठान मारे गए। मुलतान के पक्के प्रबंध के लिए शहजादा खड़क सिंघ दो महीने वहां रुका तथा उसने अकाली जी को भी अपने साथ रखा। उनकी सलाह के अनुसार स. जोध सिंघ कलसिए को मुलतान का गवर्नर, बाबा बाज़ सिंघ को किलेदार, स. फ़तहि सिंघ आहलूवालिया को तोलाबे का सूबेदार तथा स. शाम सिंघ अटारी को खानगढ़ का हाकिम स्थापित किया। इस जीत के बाद जब शहजादा खड़क सिंघ तथा अकाली फूला सिंघ लाहौर वापिस लौटे तो उनका बड़ा मान-सम्मान किया गया।

संवत् १८७५ में महाराजा रणजीत सिंघ ने भारी फौज के साथ पेशावर पर हल्ला बोल दिया। दरिया अटक से पार के खटकों तथा

पठानों ने खालसा फौज की आगे जा रही टुकड़ी का भारी नुकसान किया। इस हुए नुकसान का वाज़िब जवाब देने के लिए अकाली जी तथा स. मताब सिंघ नखेरिया की सरदारी में एक चुना हुआ जत्था भेजा गया। इस जत्थे ने वैरी दल का बहुत ज्यादा नुकसान किया। दुश्मनों के हौसले टूट गये तथा खालसा फौज ने ४ मार्गशीर्ष, संवत् १८७५ को अकाली जी के नेतृत्व में पेशवर पर खालसाई निशान झुला दिया।

संवत् १८७६ में खालसा ने कश्मीर को फ़तहि किया। दूसरी ओर मुहम्मद अज़ीम ख़ान बारकज़ई, जो काबुल का हाकिम था, बड़ी तैयारियां करके पेशावर को फिर से हथियाने के लिए जलालाबाद की ओर बढ़ा। उसने जेहाद का नारा लगाकर बेअंत मुसलमानों को धर्म की खातिर लड़ने के लिए प्रेरित किया। उधर महाराजा ने बहुत बड़ी सेना शहजादा शेर सिंघ तथा श्री किरपा राम की सरदारी तले, इस जेहाद के नाम पर इकट्ठी हुई मुगल फौज को बनता जवाब देने के लिए भेजी। अगले दिन खुद महाराजा ने अकाली जी, स. देसा सिंघ मजीठीआ, स. फ़तहि सिंघ आहलूवालिया, स. अमर सिंघ सोहीआं वाला, स. रतन सिंघ घरजाखीया आदि चुनिंदा सरदारों के साथ कूच किया। खालसा फौज ने अटक दरिया को नावों के पुल के जरिए पार किया तथा अपने सैनिक दसते को दो भागों में बांटकर मुकाबला आरंभ कर दिया। दुश्मन ने दरिया के दूसरे पार से खालसा फौज को पीछे रोकने के लिए नावों का पुल उड़ा दिया। जब महाराजा रणजीत सिंघ अटक पहुंचे तो नावों का पुल बह चुका था तथा नया पुल थोड़े समय में बनाना असंभव था। सामने खालसा दल वैरी से जूझ रहा था तथा बड़े खतरे में घिरा हुआ था। समय की नज़ाकत को देखते हुए इंतजार करना खतरनाक हो सकता था। अत: अकाली जी ने उफनते दरिया में अपना घोड़ा ठेल दिया। पीछे से महाराजा साहिब तथा अन्य सरदार भी आ गए। इनके पहुंचने से खटकों के पांव उखड़ गये और मैदान खालसा के हाथ रहा। यहां अकाली जी के कहने पर स. जै सिंघ अटारी को महाराजा ने माफी दे दी तथा दल में शामिल कर लिया।

दुश्मन फौजों ने 'तरकी' की पहाड़ियों में अपने मोर्चे पक्के कर लिए तथा सख़्त मुकाबला करने के लिए तैयार हो गए। दूसरी ओर रणनीति को ध्यान में रखते हुए गुरमता पास किया गया कि जितनी जल्दी हो सके दुश्मनों को घेरा डाल लेना चाहिए। गुप्तचर विभाग द्वारा दुश्मनों की गिनती और तैयारी को मुख्य रखते हुए महाराजा साहिब को राय दी गई कि लाहौर से बड़े तोपखाने के पहुंचने से पहले दुश्मन से टक्कर लेने से नुकसान का ज्यादा खदशा है। महाराजा साहिब रणनीति में तबदीली करना चाहते थे जिसको अकाली जी ने गुरमते की मर्यादा की पवित्रता को मुख्य रखते हुए मानने से इन्कार कर दिया तथा अरदास करके जैकारे गजाते हुए रण-क्षेत्र की तरफ चल पड़े। नौशहिरा से चार मील पूर्व दिशा की तरफ कुछ नावों की मदद से सारा अकाली दल दरिया लुंडे से पार हुआ। थोड़ा ही आगे बढ़े थे कि दुश्मन की तरफ से जब्ररदस्त फायरिंग हुई, परंतु ये मरजीवड़ों का दल आगे ही बढ़ता ही गया। वैरी दल बहुत विशाल क्षेत्र में फैला हुआ था। उनके मोर्चे पहाड़ियों की चोटी पर एवं पक्के होने के कारण वे काबू में नहीं आ रहे थे। ऐसे ज्वलंत जंगे-मैदान में महाराजा कैसे अपने वीर सपूतों की आहुति दे सकते थे? उन्होंने

सब फौजी दसतों को मैदाने-जंग में पहुंचने का हुक्म दिया तथा खुद लुंडे दरिया को पार करके दोनों ओर से दुश्मन पर हमला किया। अकाली जी अपने जत्थे के साथ दुश्मन के गले पड़ने के लिए निरंतर आगे बढ़ते जा रहे थे। उनके घोड़े के ज़ख्मी हो जाने के कारण हाथी मंगवाया गया। वैरी दल को हार देने तथा अपने शूरवीरों के हौसले बुलंद रखने हेतु वे बिजली की तरह रण-क्षेत्र में विचर रहे थे। यह बहुत ही भयानक युद्ध था। महाराजा खुद आदेश देकर जरूरत वाली जगह पर दसते भिजवा रहे थे। गोरखों की पलटन को पहाड़ी के पीछे से हमला करके पठानों को खदेड़ने का हुक्म दिया गया। यह जंग खालसा फौज तथा अफ़गान पठानों की सबसे भयानक जंग थी।

चाहे यह युद्ध खालसा फौज ने जीत लिया परंतु अकाली फूला सिंघ शहीद हो गए। दुश्मनों की गोलियों से हाथी के हौज में अकाली फूला सिंघ शहादत पा गए थे। दूसरे दिन सुबह अकाली जी का अंतिम संस्कार लुंडे दरिया के किनारे पूरे सैनिक सम्मान के साथ किया गया। महाराजा द्वारा उस जगह पर इस कौमी शहीद की सदैवकालीन याद में एक 'शहीदगंज' तामीर करवाया गया तथा बड़ी जागीर इसके नाम लगवाई गई। इसकी सेवा-संभाल तथा लंगर आदि की सेवा के लिए अकाली सिंघों का एक जत्था यहां तैनात किया गया।

इस लड़ाई की जीत मात्र अकाली फूला सिंघ जी की निर्भयता एवं शूरवीरता का परिणाम था जो उन्होंने नीति से ज्यादा गुरमते की पवित्रता तथा मर्यादा की दृढ़ता के लिए कर दिखाई। इस फ़तहि से जमरौद से मालाकंड तथा रुस्तम से लेकर खटक तक का सारा इलाका खालसा के कब्ज़े में आ गया। यह वही सरहदी इलाका है जिसको सर करने के लिए अकबर एवं जहांगीर जैसे शहंशाहों को मुद्दतों तक लड़ना पड़ा था। यह इलाका अकाली जी की दृढ़ता तथा शूरवीरता से कुछ ही दिनों में खालसा राज्य का भाग बन गया। इस जीत से सरहदी इलाके में बसते पठानों के दिलों में खालसा की बहादुरी एवं दिलेरी की धांक जम गई।

अकाली जी की शख़्सियत गुरबाणी के रंग में रंगी हुई तथा आत्मिक उच्चता से सराबोर थी। उनके हृदय में श्री गुरु ग्रंथ साहिब तथा गुरु-पंथ का असीम सत्कार था। *"मरउ त हरि कै दुआर"* के सिद्धांत ने उनमें ऐसी दृढ़ता भर दी थी जिसने उनको एक लासानी शूरवीर बना दिया। 'निरभउ' प्रभु को जपने वाला यह परोपकारी योद्धा स्वयं भी 'निर्भय योद्धा' होकर जीआ। महाराजा रणजीत सिंघ का जाहो-जलाल कभी भी अकाली जी की निर्भयता पर भारी न हो सका। महाराजा साहिब सदैव उनकी बेदाग शख़्सियत का सत्कार और सम्मान करते रहे। सिक्ख कौम अपने इस बहादुर सपूत पर जितना भी गर्व करे उतना ही कम है। उनकी अद्वितीय शख़्सियत से हमारी कौम को सदा ही आदर्श अगुआई तथा प्रेरणा मिलती रहेगी।

अनुवादक-- स. गुरप्रीत सिंघ भोमा

श्री गुरु हरिराय साहिब की सुपुत्री बीबी रूप कौर जी

*-सिमरजीत सिंघ**

छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के महिल माता दमोदरी जी की कोख से बाबा गुरदित्ता जी, बाबा अणी राय जी तथा बीबी वीरो जी का जन्म हुआ। बीबी वीरो जी की शादी मुल्लांपुर निवासी भाई धरम चंद (खोसला) के सुपुत्र भाई साधू राम जी से सम्पन्न हुई। बाबा गुरदित्ता जी की शादी बटाला निवासी श्री रामा सरीन की सुपुत्री बीबी अनंती देवी से हुई। बाबा गुरदित्ता जी को श्री गुरु नानक देव जी के सुपुत्र बाबा श्रीचंद जी ने गुरु साहिब से ले लिया। बाबा गुरदित्ता जी ने उदासी मत के चार धूणे (केंद्र) स्थापित कर उदासियों को गुरबाणी का प्रचार तथा गुरुद्वारा साहिबान की सेवा-संभाल करने हेतु दूर-दराज भेजा। बाबा गुरदित्ता जी के घर दो सुपुत्र-- धीर मल्ल तथा श्री गुरु हरिराय साहिब का जन्म हुआ। छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने ज्योति-जोत समाने से पूर्व हर तरह से योग्य जानकर गुरिआई की जिम्मेदारी श्री गुरु हरिराय साहिब को सौंप दी।

सप्तम पातशाह श्री गुरु हरिराय साहिब के घर दो सुपुत्र-- रामराय तथा श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब तथा एक सुपुत्री बीबी रूप कौर जी का जन्म हुआ। बीबी रूप कौर जी के जन्म के समय परिवार में बहुत खुशी मनाई गयी थी। बीबी रूप कौर जी का चेहरा बहुत सुंदर था, जिस कारण आप जी की दादी जी ने आपका नाम रूप कौर रखा। कई विद्वानों का मत है कि बीबी रूप कौर जी श्री गुरु हरिराय साहिब की पालित सुपुत्री थीं जिनको गुरु जी ने बहुत लाड़-प्यार से पाला था। महान कोश के कर्त्ता भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार बीबी रूप कौर जी श्री गुरु हरिराय साहिब की पालित पुत्री थीं। भाई केसर सिंघ (छिब्बर) के अनुसार, बीबी रूप कौर जी ने गुरु साहिब के घर जन्म लिया था। उनकी कृत 'बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का' के अनुसार :

"तब धाम हरिराइ जी दे बीबी इक भई।"

श्री गुरु हरिराय साहिब ने अपने बच्चों को विद्या में निपुण करने के लिए विशेष व्यवस्था की। जब श्री गुरु हरिराय साहिब ने दारा शिकोह को पीछा करती आ रही औरंगजेब की फौज से बचाया तथा श्री गोइंदवाल साहिब वाले घाट से पार करवाकर सुरक्षित स्थान पर वह पहुंचाया तो औरंगज़ेब को पता चलने पर वह नाराज़ हो गया। औरंगज़ेब ने गुरु जी को दिल्ली राज्य दरबार में तलब कर लिया। श्री गुरु हरिराय साहिब ने अपने बड़े पुत्र रामराय को दीवान दरगाह मल्ल तथा कुछ अन्य सूझवान सिक्खों सहित दिल्ली भेजा। रामराय ने अपनी समझ के अनुसार औरंगज़ेब की नाराज़गी दूर करनी शुरू कर दी। बादशाह के दरबार में किसी चुगलखोर ने बादशाह को भड़काने के लिए कह दिया कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मुसलमानों के विरुद्ध बातें शामिल की हुई हैं। इस संबंध में-- *"मिटी मुसलमान की पेड़ै पई*

**संपादक, 'गुरमति ज्ञान' एवं 'गुरमति प्रकाश'।*

कुम्हिआर ॥ घड़ि भांडे इटा कीआ जलदी करे पुकार ॥" वाला सलोक विशेष रूप में बता दिया। रामराय ने अपनी चतुरता से *"मिटी मुसलमान की"* को *"मिटी बेईमान की"* कह दिया। इस उत्तर से बादशाह तो प्रसन्न हो गया परंतु श्री गुरु हरिराय साहिब ने बाणी में इस प्रकार के बदलाव को बरदाश्त न किया। उन्होंने रामराय को माथे न लगने का आदेश दे दिया। रामराय को औरंगज़ेब ने सिक्खों के विरुद्ध और भड़काने तथा अपने साथ मिलाने के लिए देहरादून में बड़ी जागीर जारी कर दी। गुरु-घर से बहिष्कृत किए जाने के कारण रामराय की पत्नी बीबी राज कौर ने भी उसको त्याग दिया तथा खुद मनीमाजरा में निवास कर लिया।

बीबी रूप कौर जी की उम्र लगभग १२ वर्ष होगी जब श्री गुरु हरिराय साहिब ज्योति-जोत समा गए। श्री गुरु हरिराय साहिब के ज्योति-जोत समाने के उपरांत श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब गुरगद्दी पर बैठे।

कीरतपुर साहिब में वैसाखी का पर्व श्रद्धा-भावना से मनाया जा रहा था। दूर-दराज से संगत पहुंची हुई थी। ज़िला सियालकोट के गांव पसरूर से भाई पैड़ा मल्ल भी अपने परिवार सहित गुरु जी के दर्शन को आया हुआ था। उसके साथ उसका पुत्र भाई खेमकरन भी था। इनकी सेवा-भावना से बीबी रूप कौर जी की मां माता किशन कौर जी बहुत प्रभावित हुए। इन्होंने भाई पैड़ा जी के पास उनके पुत्र भाई खेमकरन के साथ बीबी रूप कौर जी के रिश्ते की बात चलाई। भाई पैड़ा मल्ल जी ने यह रिश्ता सहर्ष स्वीकार कर लिया। ३ दिसंबर, १६६२ ई को इनका अनंद कारज हुआ।

शादी के समय बीबी रूप कौर जी की दादी जी ने डोली विदा करते समय पांच वस्तुएं (निशनियां) देकर उनको अंग-संग रखने की प्रेरणा दी। ये वस्तुएं थीं-- बाबा गुरदित्ता जी की सेली तथा टोपी, श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की कटार, गुरु जी की साखियों वाली पोथी तथा रेहल। ये पांच वस्तुएं बीबी रूप कौर जी ने जान से भी ज्यादा संभालकर रखीं। बीबी रूप कौर जी का जितना सत्कार मायके में था उससे भी कहीं ज्यादा ससुराल वालों से किया।

शादी के बाद बीबी रूप कौर जी अपने पति भाई खेमकरन जी के साथ कीरतपुर साहिब में ही रहने लगे। जब श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब १६६४ ई में दिल्ली जाने के लिए रवाना हुए तो उन्होंने अपना पहला पड़ाव अपनी बहन बीबी रूप कौर जी के पास ही किया था। जब श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब दिल्ली में ज्योति-जोत समा गए उस समय माता किशन कौर जी गुरु जी के पास दिल्ली में ही थे। संगत कीरतपुर साहिब इकट्ठा होना शुरू हो गई। बीबी रूप कौर जी ने ही संगत की सेवा-संभाल की।

बीबी रूप कौर जी के घर एक पुत्र का जन्म हुआ जिसका नाम भाई अमर चंद रखा गया। बाद में भाई अमर चंद ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय खंडे-बाटे की पाहुल प्राप्त कर अपना नाम भाई अमर सिंघ रख लिया।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के ज्योति-जोत समाने के बाद श्री गुरु तेग बहादर साहिब गुरगद्दी पर बैठे। जब श्री गुरु तेग बहादर साहिब शहीदी के लिए श्री अनंदपुर साहिब से रवाना हुए तो उस समय वे एक रात के लिए बीबी रूप कौर जी के पास कीरतपुर साहिब रुके। दशम पातशाह साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी भी कई बार बीबी रूप कौर जी के पास कीरतपुर साहिब गए।

रामराय की पत्नी बीबी राज कौर का देहांत मनीमाजरा में ही हुआ। इनकी याद में वहां एक गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है। इस गुरुद्वारा साहिब की सेवा-संभाल बीबी रूप कौर जी की वंश के सोढी साहिबान ही करते थे। इस स्थान की आमदन ज्याना न होने के कारण महाराजा पटियाला ने १८०१ ई में इनको बनूड़ के समीप दिआलपुर गांव की जागीर जारी कर दी। इनके परिवार में से बहुत-से लोग यहां आकर आबाद हो गए।

कीरतपुर साहिब में बीबी रूप कौर जी के निवास स्थान वाली जगह पर गुरुद्वारा श्री मंजी साहिब सुशोभित है। यहां बीबी रूप कौर जी की विरासती निशानियां भी संभाली हुई हैं। इनमें बीबी रूप कौर जी का कढ़ाई किया हुआ रुमाल, पंखा, बाबा श्रीचंद जी की सेली व टोपी, जो उन्होंने बाबा गुरदित्ता जी को दी थी, चारपाई तथा बीबी रूप कौर जी से सम्बंधित एक पोथी 'श्री सतिगुरू जी दे मूंह दीआं साखीआं' हैं।

'श्री सतिगुरू जी दे मूंह दीआं साखीआं' पोथी में साखियों का संग्रह है। इस पोथी के कुल ५५९ पृष्ठ हैं। पृष्ठ ४९२ से ५५९ तक साखियां हैं। इन साखियों को १९७८ ई में डॉ नरिंदर कौर (भाटिया) द्वारा संपादित करके पुस्तक रूप में छापा गया है। इसमें कुल ३८ साखियां हैं। पहली ३३ साखियों का स्रोत 'बीबी रूप कौर जी वाली पोथी' बताया गया है।

कहा जाता है कि बीबी रूप कौर जी अपने पिता जी के मुखारबिंद से उच्चरित साखियों को अपने हाथों से लिखकर संभाल लिया करते थे। यही कारण है कि बीबी रूप कौर जी को 'पहली सिक्ख बीबी लिखारी' होने को गौरव भी प्रदान किया जाता है। बीबी रूप कौर जी वाली पोथी में 'गुरु जी बोलदे, कर्हिदे, कहांदे, समझांदे' शब्दों का प्रयोग किया गया है। इस पोथी में बीबी रूप कौर जी ने गुरु जी के उपदेशों को खूबसूरत ढंग से लिखा है। इसमें बताया गया है कि सिक्ख किस तरह अरदास-विनती करते हैं; किस तरह से गुरु जी उठाए हर सवाल का जवाब देते हैं; गुरुद्वारा साहिबान में जाते समय किस तरह अदब-सत्कार रखा जाता है। इस पोथी के पहले ७० तथा ४०० से आगे के पृष्ठ समय की मार तले आकर खराब हो चुके हैं।

स्रोत पुस्तकें :

१. मैनेजर, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब-- अनंदपुर साहिब ते कीरतपुर साहिब दे गुरदुआरे

२. डॉ रतन सिंघ (जग्गी)-- सिक्ख पंथ विशवकोश

३. डॉ सिमरन कौर-- प्रसिद्ध सिक्ख बीबीआं

४. डॉ महिंदर कौर (गिल्ल)-- तूं सतवंती तूं परधान

५. भाई केसर सिंघ (छिब्बर)-- बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का

६. डॉ नरिंदर कौर (भाटिया)-- श्री सतिगुरू जी दे मूंह दीआं साखीआं

७. भाई कान्ह सिंघ नाभा-- महान कोश

सिक्ख धर्म के उत्थान में सिक्ख महिलाओं का योगदान

*-डॉ. जगजीत कौर**

सिक्ख धर्म का प्रवर्तन श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश से प्रारंभ हुआ और स्त्री को भी 'सिक्ख' के रूप में अपनी पहचान, अपना एक विशेष गरिमामय अस्तित्व महान गुरुदेव जी की कृपा-दृष्टि से ही प्राप्त हुआ। गुरुदेव जी के प्रकाश से पूर्व तो इसकी पहचान ढोर, पशु, गंवार, शूद्र, अछूत, उपेक्षित, मूर्ख तथा घरेलू प्रयोग के अन्य पदार्थों की भांति तुच्छ कूड़े-कवाड़ में फेंके जाने के तुल्य ही थी। गुरमति के पूर्व के कई धर्मों में नारी को अति हीन दर्जा दिया गया। पुरुष प्रधान समाज में ऐसे नियम व उपनियम गठित किए गए जिसमें स्त्री को तुच्छ पदार्थ की भांति इस्तेमाल किया गया। हिंदू समाजवादी नियम निर्धारक लोगों ने तो यहां तक कहा कि "स्त्री को पुरुष के अधीन रहना चाहिए। स्त्री जन्म से पिता, युवावस्था में पति, उपरांत पुत्र के अधीन रहे। पति ही उसका परमेश्वर, जप-तप, पूजा, वेद-मंत्र, धार्मिक अनुष्ठान सब कुछ है। इसी में उसका मोक्ष है। पति की सेवा में उसकी मुक्ति है।"

प्राचीन रीतियों के अनुसार, "पति के चरणों में ही स्त्री का स्वर्ग है। पति चाहे शराबी हो, दुराचारी, कैसा भी हो वही उसका स्वर्ग है। उसे उसी के लिए पुत्र पैदा करना चाहिए। पुत्र न पैदा करने वाली स्त्री का समाज में कोई रुतबा नहीं।"

स्त्री की मर्यादा की रक्षा करने में अयोग्य भारतीय समाज ही अरब, मुस्लिम व मुगल शासन-काल में नारी जाति की रक्षा नहीं कर सका। आततायी भारत के धन-पदार्थ लूटने के साथ स्त्रियों को भी लूट ले जाते रहे। भारतीय स्त्री गज़नी के बाज़ार में टके-टके में बिकती रही। गाय, भैंस, हाथी, घोड़ों के बीच खड़ी भारतीय नारी की बोली लगती रही है। अति निंदनीय कि वह बिकती रही, लुटती-पिटती रही, बादशाहों के हरम की शोभा बढ़ाती रही।

धन्य हैं मेरे गुरुदेव, जिन्होंने नारी का पक्ष-समर्थन करते हुए ज़ोरदार शब्दों में समाज के हर वर्ग को ललकारा; संवेदनशील हो दर्दनाक शब्दों में प्रताड़ना की :

जिन सिरि सोहनि पटीआ मांगी पाइ संधूरु ॥
से सिर काती मुंनीअन्हि गल विचि आवै धूड़ि ॥'
(पन्ना ४१७)

अकाल पुरख वाहिगुरु की सुंदर रची कुदरत का अति सुंदर पक्ष है; विधाता की सृष्टि-रचना का पूरक तत्व है। वो मां है, जननी है, कलाकार की कल्पना है, मूर्तिकार की मूर्ति का प्रेरक तत्व है; राग, नाद, संगीत, काव्य, कला समस्त कलाओं की प्रेरणा है। नारी के बिना पुरुष का जीवन अधूरा है। श्री गुरु नानक देव जी ने फरमाया :

भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥
(पन्ना ४७३)

उस स्त्री का अपमान करते हो जो सुलखणी सोभावंती नारि है, गुणवंती है। इसका सम्मान करो, प्रभु दरबार में उज्जवल मुख

**१८०१-सी, मिशन कम्पाऊंड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू. पी.)-२४७००१, मो. ९४१२४-८०२६६*

लेकर जाओ :

जितु मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती चारि ॥
नानक ते मुखि ऊजले तितु सचै दरबारि ॥
(पन्ना ४७३)

गुरुदेव जी के मीठे बोलों के फाहे जब सदियों से तपते, दुखी हृदयों पर छुए गए, तो शांत-शीतल सुख अनुभूत करती स्त्री का एक नया रूप उदित हुआ। गुरुदेव जी की सहानुभूति ने उसमें आत्मसम्मान जागृत किया और सिक्ख इतिहास में सिक्ख मरजीवड़ों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलते हुए इसने अनेक गौरवशाली सुनहरे पन्नों को जोड़ा। इसका अपना रूप निर्दिष्ट हुआ-- सिक्ख स्त्री। सिक्ख रहित मर्यादा के अनुसार जो रहित मर्यादा सिक्ख पुरुष के लिए है वही सिक्ख स्त्री के लिए। मर्यादा केवल एक है, पुरुष व स्त्री के लिए अलग-अलग नहीं है। प्रतिदिन की अरदास सिक्ख पुरुष व सिक्ख स्त्री दोनों का इतिहास है।

स्त्री जामे में सिक्ख धर्म इतिहास के उन्नयन की गाथा का प्रारंभ तो बीबी नानकी जी से प्रारंभ होता है। बीबी नानकी जी श्री गुरु नानक देव जी की प्रिय बहन, सिक्ख धर्म इतिहास की पहली सिक्ख स्त्री हैं जो श्री गुरु नानक देव जी की रूहानी शक्ति को पहचान उन्हें पारब्रह्म रूप में मानकर उनकी मुरीद हुईं। महान कोश के रचयिता भाई कान्ह सिंघ नाभा लिखते हैं-- "श्री गुरु नानक देव जी की सिक्खी को धारण करने वाली पहली सिक्ख उनकी बहन बीबी नानकी जी ही थी जिसने श्री गुरु नानक देव जी को वीर नहीं पीर करके जाना।" माता सुलक्खणी जी और माता त्रिपता जी का सहयोग और त्याग किसी बड़े धर्म तप-साधना से कम नहीं है। श्री गुरु अंगद देव जी के महिल माता खीवी जी की प्रशंसा में लिखी, भाई सत्ता जी -भाई बलवंड जी द्वारा एक पउड़ी-- *"बलवंड खीवी नेक जन"* इस तथ्य की द्योतक है कि गुरुदेव संगत सजा उपदेश दे रहे थे तो माता जी घिउ (घी)-खीर का लंगर बांट सिक्खी उसूल में पंगत को परिपक्व कर रहे थे।

बीबी अमरो जी को अपनी मां से ऐसी शिक्षा मिली कि ससुराल में उस गुरमति सीख की बदौलत श्री गुरु अमरदास जी गुरु-रूप में निताणिओं के ताण हो प्रकट हुए। श्री गुरु अमरदास जी के महिल माता राम कौर जी ने बीबी भानी जी, ऐसी 'अजर जरने' वाली बेटी की शख़्सियत निर्मित की जो बेटी रूप में पिता की श्रद्धा-भावना से सेवा करती रही। बीबी भानी जी की पावन कोख से श्री गुरु अरजन देव जी शहीदों के सिरताज बनकर बाणी बोहिथ के दाता, (श्री हरिमंदर साहिब) निर्माण-कार्यों के प्रणेता, सिक्ख मत को अनूठी विकास दिशा प्रदान करने वाले गुरु प्रकट हुए। माता गंगा जी का सिक्ख धर्म-उन्नयन में किया गया काम कम प्रशंसनीय नहीं है। केवल ग्यारह वर्ष के बाल श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को ऐसे भयानक विपरीत समय में दिशा-निर्देश देती रहीं जबकि शहीदों के सिरताज पति शहीद हो चुके थे। घर में ही प्रिथी चंद जैसे शत्रु थे। माहौल अनुकूल नहीं था, परंतु सुपुत्र को आशीर्वाद देती रहीं। आगे बढ़ो, मीरी-पीरी धारण करो, ज्ञान-खड़ग के साथ शक्ति-खड़ग के सहारे सही अर्थों में *"दलि भंजन गुरु सूरमा"* हो जाओ। *"छठमु पीरु बैठा गुरु भारी"* के व्यक्तित्व का निर्माण करने वाली साहसी मां माता गंगा जी ही थीं।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की सुपत्नी माता नानकी जी द्वारा भी गुरमति को चढ़दी कला की ओर अग्रसर करने के उपक्रम होते रहे।

माता नानकी जी ने बीबी वीरो को ऐसी सीख दी कि बेटी जहां भी जाओ ऐसे कार्य करो शहीद दादा और अदम्य सूरमा पिता की गरिमा के अनुकूल ही हों। युद्धों के माहौल में डोले में बैठी बीबी वीरो ने भी पिता की शौर्य-गाथा के अनुकूल ही अपने पांच सुपुत्र-- संघो शाह, भाई जीत मल, भाई गुलाब चंद, भाई माहिरी चंद और भाई गंगा राम को दशम गुरु के चरणों में भेज युद्धों में शूरवीरता के कारनामे कर शहीद होने को समर्पित कर दिया। पांचों सुपुत्रों में से दो भंगाणी के युद्ध और बाकी श्री अनंदपुर साहिब के युद्धों में शहीद हुए। श्री गुरु हरिराय साहिब की सुपुत्री बीबी रूप कौर सिक्ख इतिहास की पहली रिपोर्ताज लेखिका बताई जाती हैं। जो गुरु काल की घटनाओं को लिखकर सहेज रखती थीं। माता किशन कौर जी श्री गुरु हरिराय साहिब के महिल और अष्ठम बलबीरा श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की माता का योगदान भी कम नहीं है। पति-गुरु की आज्ञा कि मलेच्छ बादशाह के मुंह नहीं लगना तो मां का कहना बाल-गुरु ने पालन करते हुए दिल्ली जाकर भी औरंगजेब को दर्शन नहीं दिए। माता जी ने पूरा सहयोग दिया। रोगियों की सेवा करते हुए बाल-गुरु जी खुद भी रोगग्रस्त हो गए, मगर विचलित नहीं हुए, मलेच्छों से सहायता नहीं मांगी, साहस से स्थितियों का सामना किया। बाल-गुरु जी के गुरमति प्रचार-कार्य में माता किशन कौर जी पूरा सहयोग व प्रेरणा देती रहीं। पंथ की चढ़त में भागीदार रहीं।

माता नानकी जी श्री गुरु तेग बहादर साहिब की माता एवं श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के महिल ने पति-गुरु की हर आज्ञा को शिरोधार्य कर माना। पुत्र-वधू माता गुजरी जी का पूरा ध्यान रखा। एक योग्य मां और आदर्श सास-मां के कर्त्तव्य निभा धर्म प्रचार की सहयोगी रहीं। बकाला में गुरु-घर के विरोधियों द्वारा बवाल खड़ा करने पर धीरमलियों को मुंहतोड़ जवाब दे, आंधी-तूफान भरे माहौल में गुरुदेव को ममतामयी आंचल की छांव देती रहीं। श्री गुरु तेग बहादर साहिब परिवार को पटना साहिब छोड़ ढाका (आसाम) की यात्रा पर चले गए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का पटना साहिब में प्रकाश होने पर माता नानकी जी ही बाल-गुरु और पुत्र-वधू माता गुजरी जी की संरक्षिका रहीं।

माता गुजरी जी की भूमिका तो सिक्ख इतिहास में लासानी है। १६९९ ई की वैसाखी पर अमृत-पान की घटना हो या श्री अनंदपुर साहिब की जंगों की बात हो, माता जी का रवैया हमेशा दिलेरी भरा रहा कि शेर की संतान जन्म से ही शेर होती है। जब सिक्ख इतिहास की अद्वितीय घटना छोटे साहिबजादों की शहादत का ज़िक्र होता है तब तो विश्व का प्रत्येक प्राणी आचंभित हो माता गुजरी जी के चरणों पर नत्मस्तक होता है कि कितना बड़ा साहसपूर्ण जिगरा रहा होगा इस पूजनीय मां का, जिसने पहले अपने पति-गुरु के बलिदान को सहर्ष स्वीकारा, फिर पति-गुरु की शहीदी के बाद उनके पावन शीश पर नत्मस्तक हो अरदास की, "गुरुदेव आपकी निभ आई, मुझे भी बल दो, पंथ-हित कार्यों को मैं भी निभा पाऊं।" तब समय आने पर दादी रूप में नन्हे-नन्हे दुधमुंहे बच्चों को शहादत का सबक दृढ़ करवाते हुए घोर शीत की भयानक रात में ठंडे बुर्ज में बैठी, प्यारे-प्यारे मुखड़ों को चूमती, पुचकारती उन्हें खालसा पंथ हित शहादत का जाम पीने को विदा करती है। दीवार में साहिबज़ादों के चिने जाने का समाचार पा परमात्मा की मधुर

स्मृतियों में डूबी, अकाल पुरख वाहिगुरु जी के ध्यान में मगन हो शहादत प्राप्त करती हैं। विश्व इतिहास की माता गुजरी जी अकेली मिसाल हैं और अकेली साहसी गुरु मां।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज के महिल माता सुंदरी जी ने सिक्ख धर्म के सैद्धांतिक व व्यवहारिक पक्ष को संगठित करने में अद्वितीय भूमिका निभाई। गुरु जी के ज्योति-जोत समा जाने के बाद माता सुंदरी जी पंथ के नाम हुकमनामे जारी कर पंथ की अगुआई करती रहीं। तत्त खालसा और बंदई खालसा के विवादों पर माता सुंदरी जी पंथ को योग्य अगुआई देती रहीं।

श्री गुरु अमरदास जी ने मंजी-प्रथा द्वारा 'मथो-मुरारी' और 'सज्जन सच' दो मंजियां और ५२ पीढ़े स्त्रियों को प्रचार-कार्य में दिए थे। आगे चलकर पुरुष महंत-प्रथा और पुरोहितवाद में पड़ गए। स्त्री के मंच पर उदित होने से पुरोहितवाद का खातिमा हुआ। स्वभाव से ईमानदार और गुरु को पूर्ण रूप से समर्पित स्त्री और कर्मठ पुरुष की बराबरी घोषित हुई। धर्म में दीक्षित करने और धर्म-ज्योति को प्रज्वलित रखने में पुरुष के साथ स्त्री का योगदान स्वीकार किया गया। स्वभाव से उत्तेजित पुरुष को संयमित व संतुलित समाज चलाने के लिए कोमल, मिष्टभाषी स्त्री का सहयोग पंथ में स्वीकारा गया, इसीलिए कवि संतोख सिंघ ने कहा :

भलो भयो तूं चलि कर आई ॥
नीर बिखै पाई मधुराई ॥
नातुर पंथ होत बड कूरा ॥
तेज क्रोध कलहा करि पूरा ॥

(श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ)

श्री अनंदपुर साहिब की जंग में गुरु से विमुख हो बेदावा लिखकर दे आए बेदाविए सिंघों को झकझोरने वाली और स्वयं सैनिक वेश में श्री मुकतसर साहिब की जंग में जूझने वाली माता भाग कौर जी की भूमिका कैसे भुलाई जा सकती है? माता भाग कौर जी के ललकारने पर ४० बेदाविए सिंघ सूरमे श्री मुकतसर साहिब की जंग में शिरक्त हुए, बहादुरी से लड़े, विजय प्राप्त की, शहादत दी और हमेशा-हमेशा के लिए 'चालीस मुकतों' के रूप में सिक्ख इतिहास का हिस्सा बने।

इसके बाद का बाबा बंदा सिंघ बहादर का काल हो या जकरिया ख़ान की जुल्मों की आंधी वाला काला दौर हो, घल्लूघारे हों या सिक्ख राज के पतन की आज तक की गाथा हो, सिक्ख स्त्री ने अपने को दिए गए गुरु के आशीर्वाद-बख़्शिश का समर्पित भाव से पूरा-पूरा सेवा-कर्त्तव्य निभाया है। शहीद भाई तारू सिंघ जी की शहीदी के संदर्भ में जब जकरिया ख़ान के पास शिकायत की गई कि भाई तारू सिंघ जी की माता और बहन ये तीनों मिलकर सिक्खों की मदद कर रहे हैं, तब भी भाई तारू सिंघ जी की माता व बहन के रूप में सिक्ख स्त्री जकरिया ख़ान से डरी नहीं, लंगर-परशाद तैयार कर सिंघों को पहुंचाती रही, कष्ट सहती रही। इसी प्रकार स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया, मां का इकलौता बालक, मां ने उम्मीदों से उसकी पालना की। वैसाखी वाले दिन श्री अमृतसर के पास उसने कीर्तन करते हुए नवाब कपूर सिंघ को प्रभावित किया। नवाब कपूर सिंघ ने उसकी मां को बुला पंथ हित बालक को मांग लिया। मां ने सहर्ष बालक दे दिया जो आगे पंथ की सेवा करता हुआ सुलतान-उल-कौम स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया के रूप में प्रसिद्ध हुआ। एक सिक्ख स्त्री ने मां के रूप में बालक

की ऐसी शानदार परवरिश की।

दशमेश पिता द्वारा अमृत-पान कर 'कौर', बनी स्त्री गुरु के प्रति वचनबद्ध रही है। जमरौद के किले में बीबी हरशरन कौर का मौजूद रहना स्पष्ट करता है कि जिन रास्तों से हिंदोस्तान में प्रवेश कर लुटेरे, ज़ालिम, आततायी भारत की बहू-बेटियों की आबरू लूटते रहे, हज़ारों बेगुनाह सुंदरियों को साथ ले जाते रहे, उन प्रवेश द्वारों पर अब दशमेश पिता की लाडली पहरेदार है जो अत्याचारियों को मुंहतोड़ जवाब देने के लिए तमाम भारतीय नारी जाति की जागरूक पहरेदार है। पहरा ही नहीं, वह तो कुशल राज्य-प्रबंध भी चलाती रही है। मिसल भंगीआं के भाई गुलाब सिंघ की मृत्यु पर उसकी पत्नी माई सुक्खां ने मिसल का कार्य संभाला। शुकरचक्कीए सरदार महां सिंघ के निधन पर सरदारनी राज कौर ने राज्य प्रबंध अपने हाथ में लिया और बालक (महाराजा) रणजीत सिंघ का ऐसा मार्गदर्शन किया कि वह सिक्ख राज्य का चमकता सितारा हो चमका। घनईआ मिसल के सरदार भाई जै सिंघ की पुत्र-वधू और महाराजा रणजीत सिंघ की सास माता सदा कौर की सिक्ख राज्य के निर्माण में सबल भूमिका रही है। पटियाला रियासत की फूलकीआं बीबी रजिंदर कौर और बीबी साहिब कौर कैसे मरहट्टों के विरुद्ध खड़ी रहीं, इसकी यशोगाथा तो वारों द्वारा आज भी ढाडी साहिबान गाते हैं। राज्य-प्रबंध में महारानी जिंदां की भूमिका विस्मृत नहीं की जा सकती, जिसने महाराजा के निधन पर १८४३ से १८४९ ई तक सिक्ख राज्य को संभाला। इतिहास बताता है कि लार्ड डलहौज़ी महारानी से डरता था। कहता था, रानी जिंदां स्त्री नहीं मर्द है। मर्दों जैसी दिलेरी इसमें है, इसलिए आखिर तक यह महाराजा दलीप सिंघ के अधिकारों के लिए लड़ती रही और सिक्खी पर पहरा देती रही। रोते-रोते आंखों से अंधी हो चुकी माता जब अंत में महाराजा दलीप सिंघ से मिली, सिर पर हाथ फेरते हुए जब केशों का जूड़ा नहीं पाया तो कहा, "यह मेरा पुत्र नहीं। यह 'पतित' मेरा पुत्र हो ही नहीं सकता!!" (अंग्रेज़ों ने जबरदस्ती महाराजा दलीप सिंघ का धर्म-परिवर्तन करा दिया था।) आखिर महाराजा दलीप सिंघ अमृत-पान कर सिंघ सजा, सिक्खी स्वरूप में आया। महारानी सिक्ख धर्म की जागरूक पहरेदार थी।

इसके बाद गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर हो या अन्य मोर्चे हों, सिक्ख महिलाओं ने पूरा सहयोग दिया है। मोर्चों में माता बलबीर कौर जैसी महिलाओं ने गोद में उठाए बच्चों तक की शहादत दी है। सन् १९४७ का देश-विभाजन हो या १९८४ ई का घल्लूघारा, सिक्ख स्त्री गुरु के प्रति दृढ़ वचनबद्ध रही है। वो प्राण दे सकती है पर धर्म से हीन नहीं हो सकती। वर्तमान में जीती हुई सिक्ख स्त्री कुछ संख्या में बेशक धर्म से पथ-विचलित हुई है, मगर निराशावादी अब भी नहीं है। गुरु बख़्शिश करें! सिक्ख स्त्री आदर्श रोल मॉडल बनती रहे। ❁

जीअ जंत सभि जिनि कीए . . .

-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ*

गुरमति एक सम्पूर्ण विचार है जो मनुष्य का कायाकल्प करने में सर्वसमर्थ है। कायाकल्प अंतर के तल पर भी और बाहरी स्तर पर भी। श्री गुरु नानक देव जी दरअसल जिन परिस्थितियों से रूबरू हुए उन पर किन्हीं संशोधनों, सुधारों, विकल्पों से पार नहीं पाया जा सकता था एक परिवर्तन की लहर की आवश्यकता थी। ऐसा करना श्री गुरु नानक देव जी जैसी दिव्य आत्मा के वश में ही था। उन्होंने पूरी तरह से नई सोच संसार के सामने रखी और एक ऐसे ज्ञान के सूर्य का आगाज़ किया जिसकी रोशनी ने सभी को विस्मित कर दिया। मनुष्य को उसके मूल तक ले जाना और उस मूल स्वरूप की पहचान करना गुरमति का महान उद्देश्य था, जिसने सदियों से स्थापित धारणाओं और मान्यताओं को उलट दिया तथा जीवन के ढंग को बदल दिया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब इस अमूल्य ज्ञान का महासागर हैं और श्री गुरु ग्रंथ साहिब के आरंभ में अंकित पावन शबद दिशा दिखाने वाली रौशन मीनार की तरह है, जिसे 'मूल मंत्र' के विशेषण से जाना जाता है। यह पूर्ण शबद है :

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

यह सम्पूर्ण शबद इसलिए है क्योंकि यह परमात्मा की अवधारणा से आरंभ होता है और उस अवधारणा को प्राप्त करने के संकल्प पर समाप्त होता है। भाषायी वाक्य-विन्यास की दृष्टि से भी इसकी सम्पूर्णता 'गुर प्रसादि' पर सिद्ध होती है। इसे 'मूल मंत्र' कहा जाता है, किंतु सतर्क रहने वाली बात यह है कि इसे 'पारंपरिक मंत्रों' के अर्थ में न ग्रहण करें। 'मंत्र' और 'मंत्रों' की शक्ति' के बारे में बहुत कुछ प्रचलित है, किंतु यहां 'मंत्र' का अर्थ संकेत या सार से ही लिया जाना चाहिए, क्योंकि गुरमति में किसी भी तरह के टोटकों-चमत्कारों के लिए कोई स्थान नहीं है। 'मूल मंत्र' चमत्कार कर सकता है हमारे जीवन को बदलने में, हमारी दृष्टि को शुद्ध करके, यदि हम इसके अंतर्निहित विचारों को अंगीकार कर लें। 'मूल मंत्र' हमें दिशा दिखाता है और श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शरण में जाकर उस दिशा की समझ आती है। 'मूल मंत्र' को समझकर ही गुरमति की बारीकियों को जाना जा सकता है। 'मूल मंत्र' को जान लेना गुरमति की थाह पा लेना है। इसका एक-एक शब्द गुरु-सोच के स्तंभ की तरह है।

'मूल मंत्र' का प्रथम शब्द 'ੴ' बिना किसी भूमिका के परमात्मा के दर्शन कराने वाला है। श्री गुरु नानक देव जी ने सारे भ्रम तोड़ते हुए कहा है कि परमात्मा एक है और निराकार है, जो इस सृष्टि के शीर्ष पर बैठा हुआ है। वह सृष्टि का सृजन करने वाला है :

कीता पसाउ एको कवाउ ॥
तिस ते होए लख दरीआउ ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥

*E-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो. : ९४१५९६०५३३

तू सदा सलामति निरंकार ॥ (पन्ना ३)

उपरोक्त वचन में श्री गुरु नानक देव जी एकत्व का संदेश दे रहे हैं। वो एक ही है, जिसने अपने एक (साधारण-से) प्रयास से ही सारी सृष्टि को रच दिया। लाखों-लाख विशिष्टताओं वाली सृष्टि बनी जो वर्णन से परे है। जो कुछ हो रहा है उसी की इच्छा से जो अविनाशी और निराकार है। निराकार अर्थात् अपने अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए किसी आकार पर आश्रित नहीं है। श्री गुरु नानक देव जी ने जब पृथ्वी पर जन्म लिया, परमात्मा के बारे में तरह-तरह के भ्रम व्याप्त थे। कितने ही 'शक्ति-केंद्र' थे जिनकी परमात्मा मानकर पूजा की जा रही थी। कितने ही स्वयं को ईश्वर का स्वरूप बता रहे थे। भ्रम में फंसे लोग एक साथ कितने ही इष्टों की पूजा करते थे। (यह स्थिति आज भी दिखती है।) लोग सत्य को देख नहीं पा रहे थे। उनकी व्यथा को गुरु साहिब ने ही समझा :

कवन गुन प्रानपति मिलउ मेरी माई ॥१॥रहाउ॥
रूप हीन बुधि बल हीनी मोहि परदेसनि दूर ते आई ॥१॥
नाहिन दरबु न जोबन माती मोहि अनाथ की करहु समाई ॥२॥
खोजत खोजत भई बैरागनि प्रभ दरसन कउ हउ फिरत तिसाई ॥३॥
दीन दइआल क्रिपाल प्रभ नानक साधसंगि मेरी जलनि बुझाई ॥ (पन्ना २०४)

यह व्याकुलता समय की थी कि ईश्वर कौन है। इस प्रश्न का समाधान अनेक यत्नों के बाद भी नहीं हो रहा था। समाधान किया श्री गुरु नानक देव जी ने। उन्होंने कहा कि प्रभु एक है और वही प्राण आधार है :

इकु पछाणू जीअ का इको रखणहारु ॥
इकस का मनि आसरा इको प्राण अधारु ॥
तिसु सरणाई सदा सुखु पारब्रहमु करतारु ॥१॥
मन मेरे सगल उपाव तिआगु ॥
गुरु पूरा आराधि नित इकसु की लिव लागु ॥१॥रहाउ॥
इको भाई मितु इकु इको मात पिता ॥
इकस की मनि टेक है जिनि जीउ पिंडु दिता ॥
सो प्रभु मनहु न विसरै जिनि सभु किछु वसि कीता ॥२॥
घरि इको बाहरि इको थान थनंतरि आपि ॥
जीअ जंत सभि जिनि कीए आठ पहर तिसु जापि ॥
इकसु सेती रतिआ न होवी सोग संतापु ॥३॥
पारब्रहमु प्रभु एकु है दूजा नाही कोइ ॥
जीउ पिंडु सभु तिस का जो तिसु भावै सु होइ ॥
गुरि पूरै पूरा भइआ जपि नानक सचा सोइ ॥४॥
(पन्ना ४५)

मनुष्य आम तौर पर माता-पिता, भाई, मित्र आदि में ही अपने जीवन के हित देखता है। गुरमति जीवन के हित एक पारब्रह्म में देखना सिखाती है। अंतर की अवस्था और परिवार-समाज के व्यवहारों का आधार भी वही है। मनुष्य समझता है कि उसे शरीर माता-पिता ने दिया। सच्चे गुरु ने सूझ दी कि तन और जीवन परमात्मा ने दिया है। मनुष्य अलग-अलग उपाय करता रहता है सुख की प्राप्ति के। सतिगुरु ने कहा कि इन उपायों की कोई आवश्यकता नहीं, सारे सुख प्रभु की शरण में हैं। उसकी शरण में जाकर मनुष्य समस्त शोक-संताप से मुक्त हो जाता है। ऐसा पारब्रह्म बस, एक ही है। उसका कोई दूसरा नाम या आकार नहीं है।

गुरसिक्ख ने यदि अपने जीवन में गुरमति के पहले पग '੧ੴ' को सही अर्थों में धारण कर लिया है तो उसके सारे संताप स्वयं ही नष्ट हो गए हैं और जीवन खुशियों से भर गया है। दुख तब होता है जब वे आधार टूटते हैं जिन पर

हमने अपना विश्वास टिकाकर रखा होता है। ये सारे सांसारिक आधार एक न एक दिन टूटते ही हैं, क्योंकि उनमें स्थायित्व का तत्व नहीं होता। एकमात्र परमात्मा ही है जिसका आधार टिकने वाला है और किसी भी स्थिति में डिगने वाला नहीं है :

भव सागर बोहिथ हरि चरण ॥
सिमरत नामु नाही फिरि मरण ॥
हरि गुण रमत नाही जम पंथ ॥
महा बीचार पंच दूतह मंथ ॥ (पन्ना ८६७)

जीवन-यात्रा में लक्ष्य की प्राप्ति के लिए परमात्मा ही सहायक है। उसकी शरण में जाने से सारे दुख दूर हो जाते हैं। विडंबना है कि इस बात पर विश्वास करना अति कठिन है। किसी भी समय परमात्मा पर से विश्वास डोल सकता है। विपत्ति में मन अन्य उपायों की ओर दौड़ने लगता है। दुख मनुष्य को पल भर में असहज कर देते हैं। परमात्मा के अतिरिक्त किसी और की शरण में जाना ही बेमुख होना है। गुरसिक्ख परमात्मा को अपना सब कुछ बना लेता है :

एकै एकै एक तूही ॥ एकै एकै तू राइआ ॥
तउ किरपा ते सुखु पाइआ ॥ (पन्ना ८८४)

एक परमात्मा ही है जिसकी कृपा से जीवन के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। गुरमति ने परमात्मा को जहां माता-पिता, भाई, मित्र के रूप में देखने की दृष्टि दी वहीं इसे नैतिक निष्ठा का तत्व प्रदान करने के लिए पति के रूप में भी देखा। समाज में पति के प्रति पत्नी की भावना को सर्वोच्च एवं पवित्रतम माना गया है। इससे आत्मा और परमात्मा के सम्बंधों में एक निखार पैदा हो गया और सफल भावनात्मक समझ पैदा हो गई :

मै कामणि मेरा कंतु करतारु ॥
जेहा कराए तेहा करी सीगारु ॥१॥
जां तिसु भावै तां करे भोगु ॥
तनु मनु साचे साहिब जोगु ॥ (पन्ना ११२८)

एक स्त्री अपने पति के प्रेम में विभोर होती है और ऐसा ही व्यवहार करती है जो उसके पति को प्रिय हो। पति को प्रिय होने के कारण उसका तन और मन दोनों पवित्र हो जाते हैं। पति को वही स्त्री प्रिय है जो उसी के लिए शृंगार करती है और मन से भी बस, उसकी ही होकर रहती है। परमात्मा भी उन्हीं को चाहता है जो बस, उसी को समर्पित हैं। जब परमात्मा को पति मान लें तो उससे सुयोग्य वर कोई और हो ही नहीं सकता और उसके प्रति पूर्ण समर्पण में कोई संदेह नहीं रह जाता। वह तो सर्वश्रेष्ठ एक ही है :

कोऊ हरि समानि नही राजा ॥
ए भूपति सभ दिवस चारि के झूठे करत दिवाजा ॥
(पन्ना ८५६)

संसार में जितनी भी श्रेष्ठता दिखायी दे रही है वह झूठी है और इसका कोई स्थायित्व नहीं है। परमात्मा ही एकमात्र शोभा और उत्तम शक्ति है। वह एक है और सृष्टि का सृजन कर सर्वत्र व्याप्त भी हो गया है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को सब जगह वही दिखा :

जलस तुहीं ॥ थलस तुहीं ॥
नदिस तुहीं ॥ नदस तुहीं ॥
ब्रिछस तुहीं ॥ पतस तुहीं ॥
छितस तुहीं ॥ उरधसम तुहीं ॥ (अकाल उसतत)

सर्वत्र परमात्मा को देखने में गुरु साहिब इतने अभिभूत हो गए कि बस, परमात्मा ही उनके सामने रह गया :

तुहीं तुहीं ॥ तुहीं तुहीं ॥
तुहीं तुहीं ॥ तुहीं तुहीं ॥
तुहीं तुहीं ॥ तुहीं तुहीं ॥
तुहीं तुहीं ॥ तुहीं तुहीं ॥ (अकाल उसतत)

एकत्व का सबसे बड़ा संदेश है-- *"तुहीं तुहीं ॥"* जब '੧ੴ' पर विश्वास दृढ़ हो जाता है तब मन विकल होकर बोलता है-- *"तुहीं तुहीं ॥"* यह उद्घोषणा होती है कि मैं कुछ नहीं, मेरा कुछ नहीं, और कोई कुछ नहीं, बस, परमात्मा ही एक परमात्मा ही। चित्त उस एक से ही लग जाता है :

सभे थोक परापते जे आवै इकु हथि ॥
जनमु पदारथु सफलु है जे सचा सबदु कथि ॥
गुर ते महलु परापते जिसु लिखिआ होवै मथि ॥१॥
मेरे मन एकस सिउ चितु लाइ ॥
एकस बिनु सभ धंधु है सभ मिथिआ मोहु माइ ॥
(पन्ना ४४)

गुरु-विचार है कि एक परमात्मा के बिना सारे कथित आश्रम मिथ्या हैं। परमात्मा से जुड़ कर जीवन को सफल किया जा सकता है। उसके जैसा कोई और नहीं है :

तू करता पुरखु अगंमु है किसु नालि तू वड़ीऐ ॥
तुधु जेवडु होइ सु आखीऐ तुधु जेहा तूहै पड़ीऐ ॥
तू घटि घटि इकु वरतदा गुरमुखि परगड़ीऐ ॥
तू सचा सभस दा खसमु है सभ दू तू चड़ीऐ ॥
तू करहि सु सचे होइसी ता काइतु कड़ीऐ ॥
(पन्ना ३०१)

परमात्मा की महानता अवर्णनीय है। वह घट-घट में व्याप्त है और सभी का स्वामी है। परमात्मा के साथ होने का एहसास है तो कोई दुख नहीं। सदैव ऐसे परमात्मा में मन रमा रहे। उसे विस्मृत करके पल भर भी नहीं रहा जा सकता :

ईहा ऊहा एकै ओही ॥
जत कत देखीऐ तत तत तोही ॥
तिसु सेवत मनि आलसु करै ॥
जिसु विसरिऐ इक निमख न सरै ॥ (पन्ना ९१३)

जब कोई इंसान नित्तनेम, साधसंगत करता हुआ अन्य फोकट कर्मकांड भी करने लगे; ज्योतिष, नगों, वास्तु, फेंगशुई, टोने-टोटकों आदि का भी सहारा लेने लगे तो यह परमात्मा के विस्मरण के समान ही है। यह दुर्बुद्धि ही है कि परमात्मा से मांगने के स्थान पर हम ऐसे स्रोतों के जाल में फंसना चाहते हैं जो परमात्मा के सामने कहीं नहीं ठहरते। कोई गुरसिक्ख यदि ऐसा उपाय कर रहा है तो वह गुरमति ज्ञान की पहली सीढ़ी पर भी नहीं चढ़ पाया है :

वाहु खसम तू वाहु जिनि रचि रचना हम कीए ॥
सागर लहरि समुंद सर वेलि वरस वराहु ॥
आपि खड़ोवहि आपि करि आपीणै आपाहु ॥
गुरमुखि सेवा थाइ पवै उनमनि ततु कमाहु ॥
मसकति लहहु मजूरीआ मंगि मंगि खसम दराहु ॥
नानक पुर दर वेपरवाह तउ दरि ऊणा नाहि को सचा वेपरवाहु ॥ (पन्ना ७८८)

गुरसिक्ख परमात्मा के प्रति भावविभोर हो उठता है कि उसने सृष्टि की रचना की और उसे जीवन भी दिया। यह भावना उसे परमात्मा से ऐसे जोड़ देती है जैसे लहर सागर से और वनस्पतियों को वर्षा से, जो उन्हें प्रफुल्लित कर देती है। परमात्मा स्वयं सहायता करने वाला है। कोई भी उसके दर से खाली नहीं लौटता। उस एक के साथ जुड़ना जीवन में रंग भर देता है :

हरि इकसै नालि मै दोसती हरि इकसै नालि मै रंगु ॥
हरि इको मेरा सजणो हरि इकसै नालि मै संगु ॥
हरि इकसै नालि मै गोसटे मुहु मैला करै न भंगु ॥
जाणै बिरथा जीअ की कदे न मोड़ै रंगु ॥
(पन्ना ९५८)

परमात्मा के प्रति एकनिष्ठ होना, आदर्शों, गुरु-विचार, शबद-गुरु, नित्तनेम, रहित मर्यादा के प्रति एकनिष्ठ होना जीवन के रंगों को कभी भी मद्धिम नहीं होने देना है। ❁

अभिशप्त कन्या-भ्रूण हत्या : एक जघन्य कृत्य

*-स. सुरजीत सिंघ**

कन्या से हमें एक ऐसी नारी मिलती है जो भविष्य की बहन, बेटी, पत्नी, मां बन परिवार, समाज एवं राष्ट्र को संस्कारवान, सुशिक्षित बनाती है। किसी का जीवन लेना घोर अपराध है। जीवन का विधाता केवल ईश्वर है जो जीवन देता भी है और लेने का अधिकार भी उसी को ही है। देश के सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयानुसार गर्भाधान के समय से ही भ्रूण मानव-जीवन होता है, इसलिए समस्त छोटे-बड़े प्राणियों को अपना जीवन जीने का पूर्ण संवैधानिक अधिकार प्राप्त है। कभी सोचा भी है कि यदि कन्या भ्रूण-हत्या का जघन्य कृत्य इसी प्रकार से फलता-फूलता रहा तो 'पुत्र' को जन्म देने वाली मां कहां से आएगी? पुत्र-वधू कहां से मिलेगी? सारे का सारा सामाजिक ढांचा ही चरमरा जाएगा ;

एक ही कुल की पहचान बनता है बेटा,
दो-दो कुलों की शान बन जाती हैं बेटियां।

दाम्पत्य जीवन घर, परिवार, समाज और देश की प्रमुख कड़ी होती है, जिसके अंतर्गत महिला-पुरुष की जनसंख्या का संतुलित होना अति आवश्यक है। नारी प्रकृति का वो अनमोल हीरा है जो मां के रूप में जीवन-निर्मात्री है। 'जन्मी-अजन्मी' निर्दोष बालाओं के कत्लेआम के कुकृत्य में हम इतने बर्बर, हृदयहीन, लज्जाहीन होते हैं, जिसका हमारे पास कोई उत्तर नहीं है। 'स्टेट ऑफ वर्ल्ड फंड २०००' की गणनानुसार एशिया की कम से कम सात करोड़ बालिकाएं, जिनके जीवित होने की संभावना थी, वे लिंग आधारित भ्रूण-हत्याओं के परिणामस्वरूप जीवित नहीं रहीं। भारत की जनसंख्या की राष्ट्रीय औसत दर ६ वर्ष की आयु तक १००० लड़कों पर मात्र ९२७ लड़कियां हैं। कुछ प्रांतों में तो यह औसत दर घटकर लगभग ८०० तक जा पहुंची है, जो कि भविष्य के लिए घातक संकेत है।

विज्ञान का लिंग परीक्षण में सदैव दुरुपयोग हुआ है। इस कृत्य में सदियों से चली आ रही सामाजिक कुरीतियां एवं अंधविश्वास ही प्रमुख कारण हैं, जैसे दहेज-प्रथा, मिथ्या रूढ़िवादिता, लड़के से वंशवृद्धि का मिथ्यावाद, मरणोपरांत मोक्ष-प्राप्ति के लिए पुत्र की कामना, वृद्धावस्था में पुत्र के सहारा बनने की इच्छा इत्यादि। कई परिवारों में पुत्रियां ही माता-पिता की सेवा करते हुए आदर्श प्रस्तुत कर उनके बुढ़ापे का सहारा बनती आई हैं, क्योंकि लड़कों की अपेक्षा लड़कियां स्वभाव से अधिक भावुक, संवेदनशील, कोमल एवं सेवाभावी होती हैं :

दुख सहकर भी प्रसन्न रहती हैं बेटियां।
कलियों-सी अति कोमल रहती हैं बेटियां।

नारी पर बढ़ता उत्पीड़न: नारी पर निरंतर हो रहे अन्याय एवं अत्याचार के बढ़ते ग्राफ उनके हितों एवं सुरक्षा हेतु बनाये गये नियमों एवं कानूनों की सार्थकता पर प्रश्न-चिन्ह लगा रहे हैं। भारत में प्रतिदिन औसतन ४२ अपराध बलात्कार के, १९ दहेज-प्रथा के कारण महिला-मृत्यु के, ११५ यौन उत्पीड़न, ३२ अपहरण एवं ८५ छेड़छाड़ की घटनाएं दर्ज होती हैं। वास्तविक संख्या तो कहीं अधिक है, क्योंकि

*५७-बी, न्यू कालोनी, गुमानपुरा, कोटा-३२४००७ (राजस्थान), मो. ९४१३६-५१९१७

सामाजिक लोक-लज्जा के कारण कई घटनाएं तो अप्रत्यक्ष ही रह जाती हैं। 'नेशनल क्राईम रिकार्ड ब्यूरो' की गणनानुसार २१वीं सदी में प्रति १०० मिनट में दहेज के लिए एक महिला की हत्या हो रही है; प्रति ३८ मिनट में महिला-उत्पीड़न का एक अपराध घटित हो रहा है; प्रति ५४ मिनट में एक बलात्कार अपराध दर्ज हो रहा है। महिलाओं के विरुद्ध होने वाले अपराधों की संख्या निरंतर बढ़ती हुई वार्षिक औसत २ लाख से ऊपर एवं दहेज-मृत्यु की वार्षिक औसत ९ हज़ार के ऊपर जा पहुंची है। यह भी प्रमाणित सत्य है कि देश के किसी न किसी कोने में प्रति घंटा एक युवा विवाहित को या तो मार दिया जाता है अथवा ज़बरन मौत के मुंह में धकेल दिया जाता है।

बढ़ते अल्ट्रासाउंड सेंटर : कन्या-भ्रूण हत्या की रोकथाम हेतु सरकार ने सन् १९९४ में नियम बनाकर भ्रूण-परीक्षण कानूनी रूप से अवैध एवं दंडनीय अपराध घोषित कर रखा है, किंतु फिर भी देश भर में बिना रोक-टोक एवं भय रहित यह घृणित कार्य किया जा रहा है। एक अनुमान के अनुसार देश भर में २७,००० अल्ट्रासाउंड सेंटर कार्यरत हैं और यह संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। कई जगह पर अल्ट्रासाउंड तकनीक का सर्वाधिक दुरुपयोग लिंग परीक्षण हेतु हो रहा है जो कि एक गंभीर समस्या है। इसका उदेश्य अन्य जांच-परीक्षण के अलावा गर्भ में पल रहे शिशु के समुचित विकास, बीमारी एवं अंगों के आकार का पता लगाना ही होता है। जनरेटर वाली अल्ट्रासाउंड मशीन लेकर चलते-फिरते क्लीनिक भी इस घृणित कार्य में योगदान करते हुए देखे जा सकते हैं।

मां की ममता एवं पिता का स्नेह मृत : आश्चर्य है कि कन्या-भ्रूण हत्या में अपने ही खून का कत्ल करने में पत्थरदिल परिवार वालों को बिलकुल भी लज्जा नहीं आती और न ही वे खूनी बनने से भयभीत होते हैं। कन्या-भ्रूण हत्या का कुकृत्य करने में परिवार वालों की संवेदनाएं न जाने कहां मृत हो जाती हैं! न मां की ममता जागती है और न पिता का स्नेह। भारत के आई एम. ए. के सर्वे के अनुसार प्रतिवर्ष ५० लाख कन्या-भ्रूण हत्याएं हो रही हैं।

चिकित्सा जगत की शिथिलता : चिकित्सा जगत को आवश्यक, पवित्र एवं सेवाभावी माना जाता है। मानव-सेवा का उद्देश्य इसके मूल में है। चिकित्सा क्षेत्र में पारंगत होने के उपरांत चिकित्सक से अपेक्षा कर ली जाती है कि वह अब सच्चे हृदय से मानव-सेवा करेगा। आश्चर्य है कि कहीं-कहीं चिकित्सक धन की अति लालसा का शिकार होकर गैर-कानूनी कन्या-भ्रूण हत्या जैसे घृणित कार्य करने से भी भयभीत नहीं होते। कन्या-भ्रूण नष्ट करवाने वालों से चोरी-छुपे मनमाना धन वसूल किया जाता ही है, जबकि अनाधिकृत गर्भपात लापरवाही के कारण कभी-कभी जीवनपर्यंत दुखदायी भी बन जाता है।

कन्या-भ्रूण हत्या सम्बंधी कानून एवं उसका दुरुपयोग : कन्या-भ्रूण हत्या रोकने के लिए सरकार ने 'कन्या-भ्रूण हत्या नियमन एवं दुरुपयोग विधेयक १९९४' का कानून लागू कर रखा है, जिसके अंतर्गत जन्म से पूर्व लिंग परीक्षण करना-करवाना, घोषणा करना, सहयोग देना, विज्ञापन करना इत्यादि को दंडनीय अपराध घोषित कर रखा है, जिसके उल्लंघन पर ३ से ७ वर्ष तक की जेल और १० हज़ार से १ लाख रुपये तक के अर्थदंड का प्रावधान है। अधिनियम में गंभीर रोगों से पीड़ित महिलाओं एवं न्यूनतम आयु की बालिकाओं के अल्ट्रासाउंड परीक्षण पर छूट है। नियमानुसार दोषी चिकित्सक का पंजीकरण निरस्त किया जा सकता है। दंडनीय अपराध होने के उपरांत भी

यह अपराध थमने का नाम नहीं ले रहा है। आश्चर्य है कि इस कुकृत्य को करने वाले चिकित्सकों को हुई सज़ाओं का प्रतिशत तो नगण्य ही है। संयोगवश यदि कोई शिकायत प्राप्त हो भी जाती है तो उसे ठंडे बस्ते में डाल दिया जाता है। इस प्रकार से सम्पूर्ण परिदृश्य ही संदेहास्पद एवं चिंताजनक परिलक्षित हो रहा है।

सभ्रांत एवं साक्षर दोषी : राष्ट्रीय जनगणना के आंकड़े प्रमाणित करते हैं कि कन्या-भ्रूण हत्या का पाप भारत के निर्धन प्रांतों की अपेक्षा समृद्ध प्रांतों में अधिक हो रहा है। एक तरफ तो विकास, शिक्षा और विज्ञान महिलाओं को गतिशील, प्रगतिशील एवं समृद्ध बना रही है जबकि इसके विपरीत यही समृद्धता कन्या-भ्रूण हत्या जैसे अपराध को बढ़ावा भी दे रही है। कन्या-भ्रूण हत्या करवाने वाले ज्यादातर साक्षर, सम्पन्न एवं शिक्षित होते हैं। इस कुकृत्य को करने वाला चिकित्सा जगत तो है ही शिक्षित। अधिक धन-प्राप्ति की लालसा ही चिकित्सीय सेवा की सफेदी को कलंकित करते हुए उसे काला स्याह कर रही है। यह अपराध नि:संदेह गांवों-कसबों से लेकर नगरों-महानगरों तक व्यापारिक स्तर पर खुलेआम अंतहीन लालसा पाले चल रहा है।

सुझाव एवं निवारण : बढ़ती कन्या-भ्रूण हत्या के भयानक परिणामों को हम शायद समझ नहीं पा रहे हैं या जान बूझकर अनभिज्ञ होने का नाटक कर रहे हैं। विकराल रूप धारण करती इस राष्ट्रीय समस्या के समाधान के लिए जनजागरूकता के साथ-साथ सकारात्मक सोच द्वारा समय रहते ठोस एवं प्रमाणिक कदम उठाने होंगे। सिक्ख धर्म की सर्वोच्च पीठ श्री अकाल तख़्त साहिब द्वारा कन्या-भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक बुराई का पूर्ण निषेध करते हुए धार्मिक पत्रिकाओं एवं जन-जागरण द्वारा यह प्रचारित किया जा रहा है कि बालक-बालिका समान हैं। इस संदर्भ में कानून की पुन: समीक्षा कर बिना भेदभाव एवं सख़्ती से इसे लागू करना चाहिए।

कविता

परोपकारी भाई घनईया जी

किसी का दर्द लेकर, शादमानी[1] कौन देता है?
किसी को दान में अपनी, जवानी कौन देता है?
नज़र आया तुम्हें हर चेहरे में दशमेश का चेहरा,
वरना जंग में दुश्मन को पानी कौन देता है?
हर इक घायल अदू[2] के लब पे, इक फ़रियाद रखी थी।
सभी के अश्क में इक तर-बतर, रूदाद[3] रखी थी।
घनईया जी ने दुश्मन को पिला कर प्यास भर पानी,
खुद अपने हाथ से 'रेडक्रास' की बुनियाद रखी थी।
जो सच्चे दिल से निकले वो, दुआ मंजूर हो जाये।
तअजुब[4] क्या अगर ज़र्रा भी, कोह-ए-नूर हो जाये!
घनईया जी चले सिक्ख धर्म के पावन उसूलों पर,
मगर ऐ काश! यह हर धर्म का दस्तूर हो जाये!

१. शादमानी- खुशी, २. अदू- शत्रु, ३. रूदाद- व्यथा कथा, ४. तअजुब- आश्चर्य

-स. करनैल सिंघ (सरदार पंछी), जेठी नगर, मलेरकोटला रोड, खन्ना-१४१४०१ (पंजाब), मो: ९४१७०-९१६६८

गुरबाणी चिंतनधारा : ७८

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

पंद्रहवीं असटपदी

सलोकु॥
सरब कला भरपूर प्रभ बिरथा जाननहार ॥
जा कै सिमरनि उधरीऐ नानक तिसु बलिहार ॥१॥
(पन्ना २८२)

उपरोक्त सलोक में गुरु पंचम पातशाह परमेश्वर के गुणों का ज़िक्र करते हुए, उसका सिमरन करने हेतु प्रेरित करते हुए उस पर बलिहार जाते हैं। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि परमेश्वर समस्त शक्तियों का मालिक है और सर्वव्यापी है, जर्रे-जर्रे में विद्यमान है। वह जीव की अंत: पीड़ा को भी जानने वाला है, क्योंकि वह अंतरयामी है। प्रभु केवल जीवों की पीड़ा, दुखों-तकलीफों को जानता ही नहीं अपितु उन्हें दूर भी करता है, क्योंकि वह दया का सागर है। गुरु पातशाह रहमतों के सागर परमेश्वर का सिमरन करने हेतु प्रेरित करते हैं, क्योंकि उसके सिमरन से ही जीव का उद्धार होना है। उसका सिमरन ही कलयुगी जीवों के लिए इस संसार रूपी भवसागर से पार उतरने हेतु जहाज है। ऐसे (गुणों के मालिक) परमेश्वर से श्री गुरु अरजन देव जी कुर्बान जाते हैं।

वस्तुत: परमेश्वर सबके दिलों का दर्द जानने वाला है, सर्वगुणों एवं शक्ति से भरपूर है। उसका सिमरन जीव को भवसागर से सहजता से पार उतार देता है। ऐसे परमेश्वर से बलिहार जाना चाहिए। चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी भी बारंबार दयालु प्रभु से बलिहार जाते हैं। गुरबाणी का प्रमाण है :

वारी मेरे गोविंदा वारी मेरे पिआरिआ हउ तुधु विटड़िअहु सद वारी जीउ ॥ (पन्ना १७४)

गुरबाणी में अनेक उदाहरण हैं, जहां भक्त अपने प्रभु पर कुर्बान जाते हुए अपनी श्रद्धा-भावना का इज़हार करते हैं, जैसा कि भक्त सैण जी की बाणी, जहां इष्ट-अभिष्ट, साधन-साध्य सब कुछ परिपूर्ण परमेश्वर है, यथा :

धूप दीप घ्रित साजि आरती ॥
वारने जाउ कमला पती ॥ (पन्ना ६९५)

असटपदी ॥
टूटी गाढनहार गुोपाल ॥
सरब जीआ आपे प्रतिपाल ॥
सगल की चिंता जिसु मन माहि ॥
तिस ते बिरथा कोई नाहि ॥
रे मन मेरे सदा हरि जापि ॥
अबिनासी प्रभु आपे आपि ॥
आपन कीआ कछू न होइ ॥
जे सउ प्रानी लोचै कोइ ॥
तिसु बिनु नाही तेरै किछु काम ॥
गति नानक जपि एक हरि नाम ॥१॥

पंद्रहवीं असटपदी की पहली पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने परमेश्वर को जीवों की प्रतिपालना करने वाला बताया है। अपने से बिछुड़े जीवों को फिर अपने से मिलाने वाले दयालु एवं अविनाशी प्रभु के अनेक गुणों का ज़िक्र करते हुए, सिमरन की बरकतों का वर्णन करते हुए गुरु जी ने इसे ही जीवनाधार माना है और जीव को नाम-

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३*

सिमरन हेतु प्रेरित किया है।

श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि प्रभु समस्त जीवों की प्रतिपालना करने वाला है। बिछुड़े हुए लोगों को पुन: अपने से मिलाने वाला भी प्रभु खुद ही है अर्थात् सांसारिक मोह-माया में फंसे हुए जीवों पर स्वयं तरस खाकर, उन्हें अपने नाम की दात बख़्शकर वह खुद से जोड़ लेता है। वह कृपालु है तथा टूटे दिलों को जोड़ने वाला है। समस्त जीवों का प्रतिपालक दातार पिता खुद ही है। परमेश्वर को सम्पूर्ण सृष्टि के जीवों की चिंता है अर्थात् प्रभु सभी जीवों के आहार का स्वयं प्रबंध करता है। उससे कोई भी खाली नहीं अर्थात् उसके दर से कोई भी निराश नहीं लौटता। वह सबकी झोलियां भरने वाला दाता है। परमेश्वर से जुड़ने के लिए प्रेरित करते हुए गुरु साहिब ने मन को प्रबोधित किया है कि हे मेरे मन! सदैव प्रभु का सिमरन कर। परमेश्वर विनाश रहित है अर्थात् सदा कायम रहने वाला है। वह अपने जैसा केवल आप ही है। उस जैसा और कोई भी नहीं है। वह विलक्षण स्वरूप है। उसकी कोई मिसाल नहीं है। जीव का किया कुछ भी नहीं होता चाहे कोई प्राणी सैकड़ों बार प्रयत्न कर ले अर्थात् सब कुछ करने एवं करवाने वाला प्रभु आप ही है। ईश्वर की इच्छा के सिवाय कुछ भी होना नामुमकिन है। अंतिम पंक्ति में श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि हे जीव! तू सदा परमेश्वर के नाम का जाप कर। उसके बिना तेरे कुछ भी काम आने वाला नहीं और न ही उसके बिना मुक्ति संभव है।

गुरबाणी में अन्यत्र भी यही समझाया गया है कि यह दुर्लभ मानव-जन्म पाकर इसे परमेश्वर का सिमरन करके सफल बनाना चाहिए, जैसा कि पावन बाणी का संदेश है :

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥ (पन्ना १२)

वस्तुत: जीव स्वयं कुछ भी करने की सामर्थ्य नहीं रखता, चाहे वह सैकड़ों कोशिशें करता फिरे। वह प्रभु ही है जो सब कुछ करने-करवाने में पूर्ण समर्थ है। उसी परमेश्वर का बारंबार सिमरन करने हेतु गुरबाणी हमें प्रेरित करती है, जैसा कि पंचम पातशाह ने अन्यत्र भी इसी भाव को दृढ़ करवाया है :

करन करावन सभु किछु एकै ॥
आपे बुधि बीचारि बिबेकै ॥
दूरि न नेरै सभ कै संगा ॥
सचु सालाहणु नानक हरि रंगा ॥ (पन्ना २३६)

ऐसे सर्वकला समर्थ एवं सर्वशक्तिमान परमेश्वर का सिमरन करके ही लोक-परलोक सफल हो सकता है।

रूपवंतु होइ नाही मोहै ॥
प्रभ की जोति सगल घट सोहै ॥
धनवंता होइ किआ को गरबै ॥
जा सभु किछु तिस का दीआ दरबै ॥
अति सूरा जे कोऊ कहावै ॥
प्रभ की कला बिना कह धावै ॥
जे को होइ बहै दातारु ॥
तिसु देनहारु जानै गावारु ॥
जिसु गुर प्रसादि तूटै हउ रोगु ॥
नानक सो जनु सदा अरोगु ॥२॥

पंद्रहवीं असटपदी की दूसरी पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह जीव को किसी भी प्राप्ति पर अभिमान न करने हेतु प्रेरित करते हुए समझाते हैं कि ये समस्त प्राप्तियां उस परमेश्वर से हुई हैं, अत: इनका अहंकार न करके उस मालिक के प्रति जीव को कृतज्ञ होना चाहिए।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि

सुंदर रूप को प्राप्त करके कोई इस सौंदर्य का अभिमान न करे, क्योंकि सारा सौंदर्य प्रभु का ही दिया हुआ है अर्थात् सभी जीवों में प्रभु की ज्योति ही सुशोभित है। धनवान होकर अपने धनी होने का अहंकार मत करो, क्योंकि यह सारी दौलत उसी परमेश्वर की बख़्शिश है। अगर कोई व्यक्ति शूरवीर योद्धा कहलाता है तो वह तनिक विचार करे कि प्रभु द्वारा बख़्शी शक्ति के बिना कैसे दौड़-भाग सकता है? अगर (इस संसार में) कोई दानी (दानवीर) बनकर बैठ जाए तो उस (मूर्ख) व्यक्ति को यह स्मरण रखना चाहिए कि यह सब कुछ उस मालिक द्वारा ही प्राप्त हुआ है अर्थात् अगर कोई व्यक्ति परमेश्वर से प्राप्त करके आगे उसमें से दान करता है और स्वयं को दानी मानता है तो प्रभु ऐसे व्यक्ति को महा मूर्ख ही समझेगा। अंतिम पंक्ति में गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जिस जीव का गुरु-कृपा से अहंकार दूर हो गया वह व्यक्ति सदैव निरोगी बना रहता है।

उपरोक्त पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह ने जीव की फितरत का विस्तार से वर्णन किया है कि किस प्रकार जीव अपनी प्रत्येक प्राप्ति का अहंकार कर बैठता है जो अंतत: उसके लिए घातक ही सिद्ध होता है। सारी प्राप्ति परमेश्वर से ही होती है, लेकिन जब जीव उसे अपनी समझकर उसका अहंकार करता है तो वह जीव के लिए दुखदायी साबित होती है। गुरबाणी में पांच विकारों का ज़िक्र बार-बार आया है और साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि गुरु-कृपा से ही इन विकारों से बचना मुमकिन है। गुरबाणी का प्रमाण है :

गुरमति पंच दूत वसि आवहि मनि तनि हरि ओमाहा राम ॥ *(पन्ना ६९९)*

पांच तत्वों से बने शरीर में पांच (प्रबल) विकार मौजूद हैं जो जीव के आत्मिक गुणों को नित्य लूटते हैं। जीव किसके आगे पुकार करे कि गुण रूपी गहनों को इन विकारों से बचा सके?

अवरि पंच हम एक जना किउ राखउ घर बारु मना ॥
मारहि लूटहि नीत नीत किसु आगै करी पुकार जना ॥ *(पन्ना १५५)*

पांच विकारों में से हउमै (अहंकार) को दीर्घ रोग माना गया है और साथ ही हिदायत की गई है कि इन रोगों का इलाज किसी वैद्य, हकीम या डॉक्टर के पास नहीं है, बल्कि जिस पर पारब्रह्म परमेश्वर कृपा करता है उसे ही पूर्ण गुरु प्राप्त होता है और गुरु-कृपा से गुरु-वचन की कमाई करता हुआ जीव इस अहंकार रूपी दीर्घ रोग से निजात पा सकता है :

हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ॥
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ॥
नानक कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि ॥
(पन्ना ४६६)

जो जीव शबद-गुरु के अनुरूप अपना जीवन बना लेता है वही अहंकार रूपी दुख से छुटकारा पा सकता है। वाहिगुरु रहमत करे! हमें परमेश्वर एवं सतिगुरु की रहमत से प्राप्त इस जीवन एवं समस्त सुखों का शुक्राना करना आ जाए, तभी हमें सच्चा एवं सदीवी आनंद प्राप्त हो सकेगा।

जिउ मंदर कउ थामै थंमनु ॥
तिउ गुर का सबदु मनहि असथंमनु ॥
जिउ पाखाणु नाव चड़ि तरै ॥
प्राणी गुर चरण लगतु निसतरै ॥
जिउ अंधकार दीपक परगासु ॥
गुर दरसनु देखि मनि होइ बिगासु ॥
जिउ महा उदिआन महि मारगु पावै ॥
तिउ साधू संगि मिलि जोति प्रगटावै ॥
तिन संतन की बाछउ धूरि ॥

नानक की हरि लोचा पूरि ॥३॥

पंद्रहवीं असटपदी की तीसरी पउड़ी में गुरु पातशाह ने गुरु-शबद की महिमा पर प्रकाश डाला है कि किस प्रकार जीव हेतु गुरु-शबद जीवनाधार है। नाव में पड़े पत्थर सदृश्य जीव गुरु-चरणों रूपी नाव के आसरे भवसागर से सहजता से पार उतर जाता है। श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि जैसे घर की छत को स्तंभ सहारा देकर उसे टिकाए रखता है ठीक उसी तरह गुरु का शबद (उपदेश) मन का सहारा बनता है अर्थात् उसे विकारों की दलदल में गिरने से बचाकर रखता है। जिस प्रकार नाव में पड़ा हुआ पत्थर नदी से पार उतर जाता है, उसी प्रकार जीव सतिगुरु के चरणों के साथ जुड़कर भवसागर से पार उतर जाता है अर्थात् गुरु के चरण भी जीव के लिए कश्ती की तरह हैं, जिनके आसरे जीव सहजता से संसार-समुद्र से पार हो जाता है। जैसे दीपक अंधकार को मिटाकर प्रकाश कर देता है, वैसे ही गुरु का दीदार करके मन में हर्षोल्लास बना रहता है। जिस प्रकार घने जंगल में भटके हुए (मार्ग से विचलित) जीव किसी की सहायता से मार्ग पा ही लेते हैं, उसी तरह साधु की संगति द्वारा अंत:करण में प्रभु-ज्योति प्रकट हो जाती है। अंतिम पंक्ति में गुरु साहिब पावन फरमान करते हैं कि मैं भक्त-जनों की चरण-धूलि मांगता हूं। हे मालिक! मेरी यह मनोकामना पूर्ण करो।

इस पउड़ी में गुरु साहिब ने प्रभु से मिलाने वाले संत (सतिगुरु) की स्तुति की है। इस पउड़ी में एक तथ्य यह भी उजागर हुआ है कि साधारण तौर पर देखा जाए तो एक छोटे से पत्थर का टुकड़ा (कंकर) भी पानी में डूब जाता है। वैज्ञानिक रूप से देखा जाए तो वह पत्थर का टुकड़ा नाव में पड़ा होने के कारण किसी भी जल-स्रोत से पार उतर सकता है। ठीक इसी प्रकार विकारों के बोझ से यह पाषाण रूपी मनुष्य भवसागर से पार तभी उतर सकता है अगर जीव गुरु की शरण में आकर नाम-सिमरन करता है, तब उसका संसार रूपी भवसागर से उद्धार हो जाता है। वस्तुत: गुरु-चरणों में आकर समस्त अभिलाषाएं पूर्ण हो जाती हैं और हृदय आनंद से भरपूर रहता है। गुरबाणी में अन्यत्र भी इसी भाव की पुष्टि हुई है। चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी पावन फरमान करते हैं :

जिसु मिलिऐ मनि होइ अनंदु सो सतिगुरु कहीऐ ॥
मन की दुबिधा बिनसि जाइ हरि परम पदु लहीऐ ॥ . . .
करि किरपा हरि मेलिआ मेरा सतिगुरु पूरा ॥
इछ पुंनी जन केरीआ ले सतिगुर धूरा ॥२॥
(पन्ना १६८)

श्री गुरु नानक देव जी की पावन बाणी का भी यही संदेश है :

नानक नामु जपहु तरु तारी सचु तारे तारणहारा हे ॥ (पन्ना १०२७)

गुरबाणी आशयानुसार परमेश्वर की पावन नाम रूपी कश्ती द्वारा ही जीव भवसागर से पात उतर सकता है।

मन मूरख काहे बिललाईऐ ॥
पुरब लिखे का लिखिआ पाईऐ ॥
दूख सूख प्रभ देवनहारु ॥
अवर तिआगि तू तिसहि चितारु ॥
जो कछु करै सोई सुखु मानु ॥
भूला काहे फिरहि अजान ॥
कउन बसतु आई तेरै संग ॥
लपटि रहिओ रसि लोभी पतंग ॥
राम नाम जपि हिरदे माहि ॥
नानक पति सेती घरि जाहि ॥४॥

चौथी पउड़ी में गुरु साहिब ने उस मालिक

के हुक्म में जीव को हर परिस्थिति में खुश रहने की सीख दी है। मन को प्रबोधित करते हुए उसे समझाया है कि यह सुख-दुख तो जीव को अपने पूर्व में किये कर्मों के अनुसार भोगने ही पड़ते हैं, अत: जीव को परमेश्वर का नाम जपते हुए सम्मान सहित प्रभु की दरगाह में जाना चाहिए।

गुरु पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि हे मूर्ख (अज्ञानी) मन! क्यों व्यर्थ में विलाप करता है? यहां जो कुछ भी प्राप्त होता है वह पिछले जन्मों के कर्मों के अनुसार ही होता है। दुख और सुख देने वाला प्रभु आप ही है। तू अन्य समस्त आश्रय छोड़कर केवल परमेश्वर को याद कर! प्रभु जो कुछ भी करता है (तुझे जिस हाल में भी रखता है) तू उसे ही भला मान! हे अज्ञानी! तू क्यों भूला फिरता है? प्रभु जैसा करता है उसी को सुख मान। हे प्राणी! तू मन में विचार कर कि जब तू संसार में आया था तो अपने साथ क्या लाया था अर्थात् तू तो खाली हाथ आया था और खाली हाथ ही जायेगा। तू पतंगे की भांति विषय-विकारों के रस में लिप्त होकर अपना जीवन गंवा रहा है। गुरु पातशाह का सारे जीवों को यही संदेश है कि हृदय में सदैव प्रभु का स्मरण करते रहो। प्रभु-नाम के जाप की बदौलत मान-सम्मान से निज घर (प्रभु का घर) में वापिस पहुंच जाओगे।

गुरबाणी में अन्यत्र भी समझाया गया है कि हे प्राणी! तू तो मुनाफे का सौदा करने आया था। यहां आकर तू किन कुकर्मों में ग्रसित हो गया है?

प्राणी तूं आइआ लाहा लैणि ॥
लगा कितु कुफकड़े सभ मुकदी चली रैणि ॥
(पन्ना ४३)

गुरबाणी द्वारा जीव को बारंबार समझाया गया है कि तू परमात्मा के मिलन को भुलाकर व्यर्थ के कामों में उलझ गया है। इंसान नेक कर्म करने में आलस्य करता है। कल-कल करते 'काल' आ जाता है। बचपन में सोचता है कि जवानी में नाम-सिमरन कर लूंगा, जवानी में सोचता है कि बुढ़ापे में प्रभु-सिमरन करूंगा, लेकिन गुरबाणी आशयानुसार तो यह जीवन उस मालिक की खेती है। वह जब चाहे इस फसल को काट सकता है।

खेती हरी, अधपकी अथवा पूरी पकी काटी जाएगी अर्थात् बचपन, जवानी, बुढ़ापे में मौत कब आ जाएगी, कोई नहीं जानता :

हरी नाही नह डडुरी पकी वढणहार ॥
लै लै दात पहुतिआ लावे करि तईआरु ॥
जा होआ हुकमु किरसाण दा ता लुणि मिणिआ खेतारु ॥ (पन्ना ४३)

संसार की नश्वरता की हकीकत बयान करते हुए गुरु साहिब ने जीव को लोभ-लालच की प्रवृत्ति से बचकर परमेश्वर का सिमरन करने हेतु प्रेरित किया है :

मुह काले तिन्ह लोभीआं जासनि जनमु गवाइ ॥
(पन्ना १४१७)

हर पल उस परवरदिगार के चरणों में अरदास करनी चाहिए कि हे रहमतों के सागर! तू ही रहमत करके हमें अपने नाम की दात बख़्श, जिससे हम अपना जीवन सफल बना सकें :

सतसंगति हरि मेलि प्रभ हरि नामु वसै मनि आइ ॥
जनम मरन की मलु उतरै जन नानक हरि गुन गाइ ॥ (पन्ना १४१७)

☸

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष साहिबान : १८

स. क्रिपाल सिंघ 'चक्क शेरेवाला'

*-स. रूप सिंघ**

स. क्रिपाल सिंघ 'चक्क शेरेवाला' का जन्म ४ जनवरी, १९०२ ई. को स. हरनाम सिंघ तथा सरदारनी संत कौर के घर गांव चक्क शेरेवाला, शाही जागीरदार घराने में ज़िला फिरोज़पुर में हुआ। आप जी ने मैट्रिक सरकारी हाई स्कूल, फिरोज़पुर से उत्तीर्ण की। आपका अनंद कारज सरदारनी ईशवर कौर के साथ रावलपिंडी में १९२१ ई. में हुआ। आपके घर दो सुपुत्र तथा दो सुपुत्रियां पैदा हुईं। सरदार साहिब का सारा परिवार गुरु-कृपा सदका उच्चतर पदों पर विराजमान रहा। आप हॉकी, फुटबाल तथा पोलो के अच्छे खिलाड़ी थे। आप गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर तथा अकाली लहर से प्रभावित होकर इसमें शामिल हो गए। आप जी पंथ-रत्न मास्टर तारा सिंघ जी के बहुत बड़े प्रशंसक थे। मास्टर जी के जीवन-दर्शन से प्रभावित होकर इन्होंने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की गतिविधियों में हिस्सा लेना शुरू किया और तरक्की करते-करते अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पद तक पहुंचे।

मास्टर तारा सिंघ जी के साथ आप जी ने पंजाबी सूबा मोर्चे में सक्रियता से भाग लिया तथा १० मई, १९५५ ई. को गिरफ्तार हुए। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के आम चुनाव के बाद प्रथम जनरल एकत्रता ७ फरवरी, १९५५ ई. को मास्टर तारा सिंघ जी की अध्यक्षता में हुई। इसमें स. क्रिपाल सिंघ (पंजाब से) शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य नामज़द किए गए। इसी दिन वे कार्यकारिणी के सदस्य चुने गए। ११ नवंबर, १९५६ ई. को हुए जनरल समागम में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कनिष्ठ उपाध्यक्ष चुने गए।

फिर ३ दिसंबर, १९५७ ई.; ७ मार्च, १९६० ई. तथा १० मार्च, १९६१ ई. को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के हुए जनरल इजलासों के समय भी आप जी कनिष्ठ उपाध्यक्ष चुने गए। १० मार्च, १९६२ ई. को वार्षिक बज़ट इजलास के समय सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड के चुनाव के समय ५-सदस्यीय बोर्ड नियुक्त किया गया, जिसके स. क्रिपाल सिंघ 'चक्क शेरेवाला' सदस्य चुने गए।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का जनरल इजलास २ अक्तूबर, १९६२ ई. को हुआ, जिसमें कुछ सदस्यों द्वारा सिक्ख गुरुद्वारा एक्ट की धारा ५३ एवं ६३ के अधीन एकत्रता बुलाए जाने के लिए नोटिस पहुंचने पर अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी स. क्रिपाल सिंघ 'चक्क शेरेवाला' के विरुद्ध पेश अविश्वास प्रस्ताव पर विचार करने के लिए एकत्रता बुलाई गई, जिसमें १४८ सदस्य साहिबान शामिल हुए। ज्ञानी तेजा सिंघ, अपर सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की उपस्थिति में गुरुद्वारा एक्ट की धारा ५३ एवं ६३ के अधीन कुछ सदस्यों द्वारा स. क्रिपाल सिंघ के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव प्रस्तुत होने पर यह प्रस्ताव बहुमत में पारित हो गया, जिस कारण सरदार साहिब अध्यक्ष पद से

**सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००६; मो. ९८१४६-३७९७९*

हट गए। इनकी जगह स. चंनण सिंघ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष चुने गए। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा प्रकाशित नानकशाही डायरी संवत् नानकशाही ५४१ (सन् २००९-१०) के अनुसार स. क्रिपाल सिंघ 'चक्क शेरेवाला' ११ मार्च, १९६२ से २ अक्तूबर, १९६२ तक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष के पद पर विराजमान रहे। (इस समय के 'गुरुद्वारा गज़ट' न मिलने के कारण इन तथ्यों की पुष्टि नहीं होती।)

२९ नवंबर, १९६३ ई को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के जनरल इजलास के समय स. क्रिपाल सिंघ 'चक्क शेरेवाला' नामज़द सदस्य के रूप में हाज़िर थे। इनके द्वारा कार्यकारिणी के नामों की तजवीज़ पेश की गयी जो सर्वसम्मति से प्रवान की गयी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के नए चुनाव के उपरांत १३ मार्च, १९६५ ई को स. क्रिपाल सिंघ 'चक्क शेरेवाला' श्री ननकाणा साहिब एजूकेशन ट्रस्ट, लुधियाना के पांच वर्ष के लिए ट्रस्टी चुने गए।

स. चंनण सिंघ जी, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की अध्यक्षता वाले कार्यकाल के समय १७ अक्तूबर, १९६८ ई; २९ नवंबर, १९६९ ई; २६ नवंबर, १९७० ई; १० अक्तूबर, १९७१ ई तथा २३ अक्तूबर, १९७२ ई को हुए वार्षिक जनरल इजलासों के समय स. क्रिपाल सिंघ 'चक्क शेरेवाला' वरिष्ठ उपाध्यक्ष चुने जाते रहे। २३ अक्तूबर, १९७२ ई को स. चंनण सिंघ की अध्यक्षता में आखिरी जनरल इजलास हुआ, जिसमें सरदार क्रिपाल सिंघ चक्क शेरेवाला पांच वर्षों के लिए श्री ननकाणा साहिब एजूकेशन ट्रस्ट के सदस्य चुने गए।

जत्थेदार गुरचरन सिंघ 'टौहड़ा', अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की अध्यक्षता में पहला इजलास ३१ मार्च, १९७३ ई को हुआ, जिसमें स. क्रिपाल सिंघ 'चक्क शेरेवाला' बतौर नामज़द सदस्य हाज़िर थे। टौहड़ा साहिब की अध्यक्षता के समय भी २८ नवंबर, १९७३ ई तथा ३१ अक्तूबर, १९७५ ई को हुए वार्षिक जनरल इजलासों के समय आप जी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष चुने गए।

३१ अक्तूबर, १९७५ ई को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का वार्षिक जनरल समागम कार्यालय स. तेजा सिंघ समुंदरी हाल, श्री अमृतसर में स. क्रिपाल सिंघ 'चक्क शेरेवाला' कार्यकारी अध्यक्ष की अध्यक्षता में शूरू हुआ, जिसमें कुल ९९ सदस्य उपस्थित थे। सबसे पहले बाबा ईशर सिंघ जी राड़ा साहिब तथा बाबा भगवान सिंघ जी रेरू साहिब के अकाल चलाना कर जाने पर शोक-प्रस्ताव पारित किए गए। इसी दिन भाई दिआल सिंघ अमेरिकन के अकाल चलाना कर जाने पर शोक-प्रस्ताव पारित किया गया। भाई दिआल सिंघ मुख्य ग्रंथी, सिक्ख धर्म ब्रादर्सहुड्ड (यू एस. ए) श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन के लिए अमेरिका से आए थे तथा कार-हादसा होने के कारण अकाल चलाना कर गए थे।

जनरल इजलास के समय जत्थेदार मोहन सिंघ तुड़, अध्यक्ष, शिरोमणि अकाली दल तथा सदस्य, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की राय से कमेटी के नए ओहदेदारों का चुनाव कई कारणों से स्थगित हो गया तथा पिछले ओहदेदारों को ही अपनी-अपनी पदवियों पर काम करने की इज़ाजत दी गयी। इस तरह स. क्रिपाल सिंघ 'चक्क शेरेवाला' फिर वरिष्ठ उपाध्यक्ष रह गए। इनकी अध्यक्षता में ही श्री गुरु तेग बहादर साहिब के तीन सौ वर्षीय शहीदी पर्व पर कैदियों को कैद से छूट देने एवं गुरुद्वारा 'गुरू

के महिल' के लिए लिंक रोड बनाने का प्रस्ताव पारित किया गया।

शाही जागीरदारी परिवार में परिवरिश होने के बावजूद भी आप जी नम्र तथा जनसमूह में कायदे से विचरण करने वाले बड़े अच्छे स्वभाव के मालिक थे। सरदार चक्क शेरेवाला समाज-सुधारकों के सिरदार थे। इनके प्रयत्न, उत्साह के कारण गांव चक्क शेरेवाला में २० बिस्तर वाला अस्पताल, टेलीफोन एक्सचेंज, पानी सप्लाई तथा बैंक की सुविधा लोगों को नसीब हुई। विद्या के प्रचार-प्रसार के लिए इन्होंने गांव के स्कूल को कक्षा आठवीं से कक्षा दसवीं तक उन्नत करवाया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पुराने मुलाज़िमों तथा अधिकारियों एवं स. रणवीर सिंघ भूतपूर्व सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के बताए अनुसार सरदार चक्क शेरेवाला रेलवे स्टेशन के समीप होटल ग्रैंड में ठहरते थे तथा कार्यालय आने पर सेवादारों को अपनी जेब में से ५-५ रुपए देकर जाते थे।

अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के ओहदे से हट जाने के बाद भी सरदार चक्क शेरेवाला बहुत लंबा समय शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष बने रहे। पहली अकाली सरकार बनाने में स. क्रिपाल सिंघ 'चक्क शेरेवाला' ने विशेष योगदान दिया। इमरजेंसी के समय आप कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में कार्यशील रहे।

७ अगस्त, १९८८ ई को स. क्रिपाल सिंघ 'चक्क शेरेवाला' इस नाशवान संसार को अंतिम फ़तहि बुला गए। ३० नवंबर, १९८८ ई. को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के जनरल इजलास के प्रस्ताव नंबर ८ में स. क्रिपाल सिंघ 'चक्क शेरेवाला' की मृत्यु पर शोक का प्रकटावा किया गया। आप जी की तसवीर केंद्रीय सिक्ख संग्रहालय, श्री अमृतसर में सुशोभित है। ☸

कविता

जीवन-सौदा

ज़िंदगी यह कैसी, जिसमें सुकूं नहीं है?
दौड़ते उस ओर सब, मंज़िल जिधर नहीं है।
खो गई है मंज़िल, कोशिश न खोजने की।
दौड़-भाग इतनी, फ़ुर्सत न सोचने की।
जानते तो सब हैं कि मौत आयेगी।
चुटकी में ज़िंदगी को लील जायेगी॥
पर जी रहे हैं यूं सब, मानों नहीं मरेंगे।
मर भी गये तो मानों, सब साथ ले चलेंगे।
कर्मों का फल ही केवल साथ जाएगा।
जोड़ते जो सामां, वह छूट जायेगा।
इसलिए यह ठानों, सत्कर्म ही करेंगे।
साथ जो चलेगी, वह पोटली भरेंगे।
बन सकेगा जितना, परहित सदा करेंगे।
पाप-घट हो खाली, कोशिश यही करेंगे।
देने में जो ख़ुशी है, लेने में वो कहा?
पायेंगे सुख यहां पर, सवरेगा 'वो' जहां।
सौदा तो इससे बढ़िया, कुछ हो नहीं सकता।
सबका भला हो जिसमें, सौदा वो सबसे सस्ता॥

-श्री प्रशांत अग्रवाल , ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.); मो : ९४११६०७६७२

ख़बरनामा

पत्राचार कोर्स में अव्वल आने वालों का सम्मानित किया गया

श्री अमृतसर : १३ फरवरी : गुरुद्वारा श्री दूख निवारण साहिब, पटियाला में सिक्खों की सिरमौर संस्था शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स में मैरिट में आने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित करने के लिए एक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, प्रों किरपाल सिंघ बडूंगर पूर्वाध्यक्ष शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, स. सतबीर सिंघ, सचिव, धर्म प्रचार कमेटी तथा स. रूप सिंघ,. सचिव, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने विशेष रूप से शिरकत की। सम्मान समारोह के समय अपने प्रधानगी भाषण में जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि २००७ से सिक्ख धर्म की प्रारंभिक जानकारी से संबंधित सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स शुरू किया गया है। हर धर्म व हर वर्ग का व्यक्ति दाख़िला लेकर घर बैठे ही सिक्ख धर्म, गुरबाणी, गुर इतिहास, सिक्ख रहित मर्यादा, संसार के प्रमुख धर्मों व उनके धर्म-ग्रंथों आदि के बारे में मौलिक जानकारी से भरपूर यह कोर्स कर सकता है। विभाग द्वारा पत्राचार कोर्स से संबंधित जानकारी तथा सामग्री डाक द्वारा/दसती घर-घर पहुंचायी जाती है। यह कोर्स पंजाबी, हिंदी और अंग्रेजी माध्यम में है। इस कोर्स से जहां सिक्ख धर्म के बारे में भरपूर सार्थक जानकारी प्राप्त होती है, वहीं जीवन को सफल बनाने के लिए सही प्रेरणा भी मिलती है। अब तक हज़ारों विद्यार्थी दाख़िला लेकर सफलतापूर्वक कोर्स पूरा करके गुरमति प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि वर्ष २०१० में १००० विद्यार्थियों ने पत्राचार कोर्स की परीक्षा में भाग लिया था। इस सेशन में ३१ विद्यार्थियों ने मैरिट में आकर इम्तिहान पास किया, जिनमें से बीबी करमजीत कौर सुपुत्री स. मनजीत सिंघ निवासी श्री गंगानगर ने ४०० में से ३४३ अंक लेकर प्रथम स्थान, भाई सज्जन सिंघ सुपुत्र स. भाग सिंह निवासी राजपुरा ने ३४१ अंक लेकर द्वितीय स्थान तथा भाई रामप्रीत सिंघ सुपुत्र स. हरविंदर सिंघ निवासी पटियाला ने ३३९ अंक लेकर तृतीय स्थान प्राप्त किया है। इनको आज विशेष समागम में क्रमशः ७१००, ५१०० तथा ३१०० रुपए, सर्टीफिकेट तथा सम्मान चिन्ह देकर सम्मानित किया गया है। इसके अतिरिक्त इस सैशन में २८ विद्यार्थी, जिन्होंने ८० प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए हैं, उनको ११००-११०० रुपए की राशि से सम्मानित किया है।

इसी तरह २०१२ के सैशन में लगभग ३३०० विद्यार्थियों ने परीक्षा में भाग लिया। इनमें से भाई कुलविंदर सिंघ सुपुत्र स. पूरण सिंघ निवासी तरनतारन ने ४०० में से ३४३ अंक लेकर प्रथम स्थान, बीबी परमजीत कौर सुपुत्री स. तीरथ सिंघ निवासी खरगोन (मध्य प्रदेश) ने ३४२ अंक प्राप्त कर द्वितीय स्थान तथा बीबी प्रभजीत कौर सुपुत्री स. अजीतपाल सिंघ निवासी खरगोन (मध्य प्रदेश) ने ३४१ अंक प्राप्त कर तृतीय स्थान प्राप्त किया है। इन सभी विद्यार्थियों को क्रमशः ५१००, ४१००, तथा ३१०० रुपए की नकद राशि, सर्टीफिकेट एवं सम्मान चिन्ह देकर सम्मानित किया गया है। इसके अतिरिक्त ८० प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले ३८ विद्यार्थियों को ११००-११०० रुपए की नकद राशि, सर्टीफिकेट तथा सम्मान चिन्ह देकर

सम्मानित किया गया है।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के पूर्वाध्यक्ष प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर ने कहा कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा नौजवान पीढ़ी को पत्राचार कोर्स के माध्यम से गुरमति विद्या के साथ जोड़ने का विशेष प्रयास किया गया है।

धर्म प्रचार कमेटी के सचिव स. सतबीर सिंघ ने आई संगत का अभिनंदन करते हुए बताया कि सत्कारयोग्य अध्यक्ष साहिब के दिशा-निर्देशों तले सैशन २०१३-१४ के दौरान सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स में पंजाबी माध्यम में १४२५०, हिंदी माध्यम में १५९२ तथा अंग्रेजी माध्यम में १४३३ विद्यार्थियों ने दाख़िला लिया था। इनका इम्तिहान जनवरी २०१४ में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ है। उन्होंने कहा कि इस कोर्स द्वारा जहां विद्यार्थियों को धर्म सम्बंधी प्रारंभिक जानकारी प्राप्त हो रही है, वहीं इस सम्मान-राशि द्वारा विद्यार्थियों की आर्थिक पक्ष से शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा मदद भी की जा रही है। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में इस कोर्स की परिधि और भी विशाल होने की संभावना प्रकट की जा रही है। इस अवसर पर स. रूप सिंघ सचिव, स. बलविंदर सिंघ जौड़ासिंघा अपर सचिव, स. जगीर सिंघ मैनेजर गुरुद्वारा श्री दूख निवारण साहिब, पटियाला, स. धरमिंदर सिंघ उब्भा डायरेक्टर एजूकेशन भी हाज़िर थे।

श्री अकाल तख़्त साहिब पर हुआ तीन शख्सियतों का विशेष सम्मान

श्री अमृतसर : १७ फरवरी : श्री अकाल तख़्त साहिब द्वारा भाई गुरमेज सिंघ भूतपूर्व हजूरी रागी श्री हरिमंदर साहिब को 'सिक्ख रत्न', डॉ किरपाल सिंघ हिस्टोरियन को 'प्रोफेसर ऑफ सिक्खिज्म' की उपाधि से सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ, जत्थेदार, श्री अकाल तख़्त साहिब, सिंघ साहिब ज्ञानी मल्ल सिंघ, जत्थेदार, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब तथा सिंघ साहिब ज्ञानी जगतार सिंघ मुख्य ग्रंथी श्री हरिमंदर साहिब की तरफ से तथा दिवंगत भाई अमरीक सिंघ जख़्मी को सिक्खों की प्रतिनिधि संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ की तरफ से 'शिरोमणि रागी' अवार्ड से सम्मानित किया गया।

इन सिक्ख शख्सियतों सम्बंधी बताते हुए सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने कहा कि भाई गुरमेज सिंघ ने कीर्तन की सेवा के साथ-साथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पावन गुरबाणी का ब्रेल लिप्यंतरण किया है। उन्होंने कहा कि विश्व-प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ किरपाल सिंघ ने सिक्ख इतिहास की खोज एवं लेखन पर उल्लेखनीय कार्य किया है तथा इस समय वे सिक्ख स्रोत, ऐतिहासिक ग्रंथ संपादना प्रोजेक्ट के डायरेक्टर के रूप में कार्यरत हैं। इसी तरह दिवंगत भाई अमरीक सिंघ जख़्मी ने ज़िंदगी भर गुरबाणी को रागों में गायन करने की परंपरा को निभाया है तथा वे रागों पर आधारित कीर्तन शैली को संभालने में सफल रहे है। दिवंगत भाई अमरीक सिंघ जख़्मी के सुपुत्र भाई हरजोत सिंघ जख़्मी ने इस सम्मान को प्राप्त किया।

जत्थेदार अवतार सिंघ अध्यक्ष शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने सम्मानित की गई शख़्यितों के पारिवारिक सदस्यों तथा समूह संगत का हार्दिक अभिनंदन करते हुए उनका धन्यवाद किया। मंच संचालन स. दलमेघ सिंघ सचिव, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने किया। इस अवसर पर शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सदस्य साहिबान, अधिकारी साहिबान के अलावा धार्मिक क्षेत्र की जानी-मानी हस्तियां उपस्थित थीं।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०३-२०१४